लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

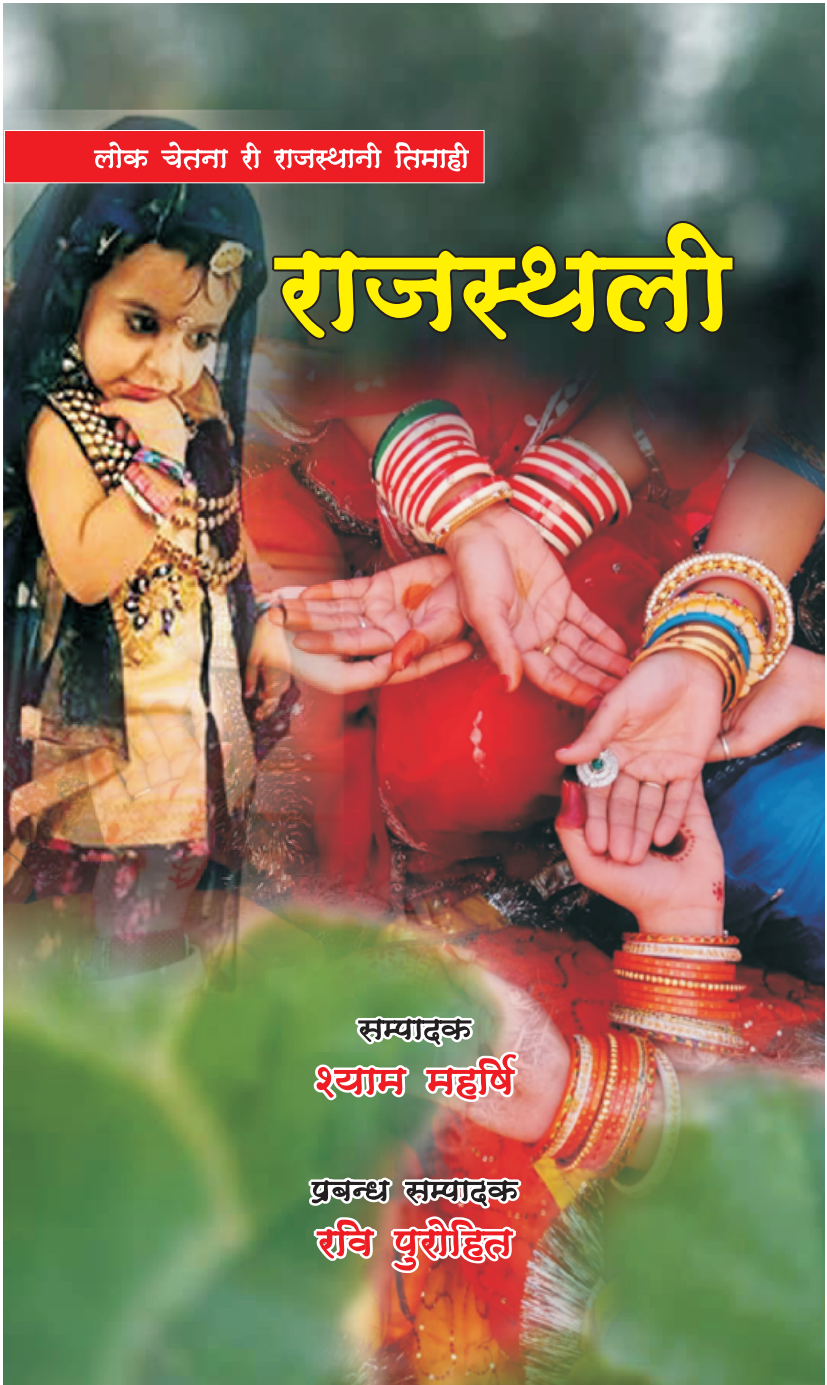

सम्पादक

श्याम महर्षि

प्रबन्ध सम्पादक

रवि पुरोहित

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

अप्रैल-जून, 2020

बरस : 43 अंक : 3 पूर्णांक : 147

संपादक
श्याम महर्षि

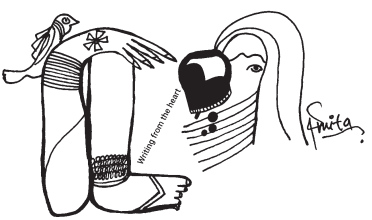

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

प्रकाशक
मरुभूमि शोध संस्थान
राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803
www.rbhpsdungargarh.com

e-mail : rajasthalee@gmail.com
ravipurohit4u@gmail.com

आवरण

किरण राजपुरोहित 'नितिला'
जोधपुर

रेखाचित्राम

डॉ. सुनीता
दिल्ली

ग्राहक शुल्क

पांच साल : 500 रिपिया, आजीवण : 1500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

संपादकीय

कोरोना रो कहर : बचाव ई उपाव — *श्याम महर्षि* — 3

कहाणी

मन रा डोरा — *संतोष चौधरी* — 4

बाळसाद — *माणक तुलसीराम गौड़* — 15

रुजगार — *शंकर लाल माहेश्वरी* — 23

लघुकथा

मिरतु-पास / स्राप / मीटिंग / मिनखाचारो / हुकम — *नदीम अहमद नदीम* — 27

वौ ईज हुयग्यो — *राजेश अरोड़ा* — 29

संस्मरण

दूजो चेहरो — *पूर्ण शर्मा 'पूरण'* — 30

व्यंग्य

नूंवो बरस, नूंवी कामना — *छगनलाल व्यास* — 34

कविता

चांद / ठूंठ / अबोली प्रीत — *डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित* — 38

चेत / उण दिन / बेटी रो जलम / होसी थारी म्हारी बातां — *दशरथ कुमार सोलंकी* — 40

बीनणी अर बुहो / लिछमी री आस / कविता तो उपजै

बाड़ / टावर / भासा बिना / मांयला ही जाणै — *देवीलाल महिया 'देबू'* — 42

थारी प्रीत / थूं अणबोल्यो छानै सै / थारै होवण नै — *पवन राजपुरोहित* — 44

मां ई होय सकै ही ! / मनड़ा आगै-आगै चाल — *इन्दु तोदी* — 45

गीत

चंदरमो / करसो — *देवकी दर्पण* — 46

गजल

दो गजलां — *डॉ. विनोद सोमानी 'हंस'* — 49

दूहा

पद-पचीसी — *दीनदयाल ओझा* — 50

शहीद-पचीसी — *मदनसिंह राठौड़* — 52

कूंत

उमगता हेत सूं सिरजी शिक्षाप्रद बाल कहाणियां — *सी.अेल. सांखला* — 54

कोरोना रो कहर : बचाव ई उपाव

धरती पर बगत-बगत माथै नित नूंवा वायरस आवता ई रैया है। पुराणै जमानै मांय प्लेग, माता, ओरी अर दूजा केई तरै रा रोग हुवता रैया है। आं बरसां मांय भी चिकनगुनिया, डेंगू आद नित नूंवा रोग चाल पड़्या। पण इण बरस 'कोरोना' वायरस तो पैलो अैड़ो रोग है जिण सूं डरपीजनै आखी दुनिया हाल खड़ी हुई। वैग्यानिक इण सूं बचणै री वैक्सीन अर प्रतिरोधक दवा बणावण मांय लाग्योड़ा है, पण फिलबगत इण सूं बचणै रो उपाय फकत सावचेती है।

इण कोरोना संकट काळ मांय सै सूं दुखी जिको वरग है बो है मजूर वरग। प्रधानमंत्री री केई बार घोसणा अर अपील रै बावजूद मुलक रै कारपेट घराणां सूं लेयनै 20-30 मजूर राखणियां कारखाना रा मालिक ई न तो आं मजूरां नै कोरोनो काळ मांय 'लॉकडाउन' रै दो-तीन महीनां रै बगत री तणखा दी अर न बांनै आपरै क्वाटरां मांय राख्या। इण रो नतीजो औ हुयो कै मुलक रा लाखूं मजूर भूखा-तिस्सा मरता सड़कां माथै आयग्या। मजूरां री इण पीड़ रो निस्तारो न तो अजै केन्द्र सरकार कर सकी है अर न ई राज्य सरकारां। आज ई गरीब, बेसहारा लुगाई-टाबर अर मोट्यार सड़कां माथै फिरता दीसै। लारला सौ बरसां मांय इयां कदैई कोनी हुयो कै सगळा लोग घरां मांय बंद रैया हुवै। सगळा काम-धंधा अेकाअेक ठप्प हुयग्या हुवै। आम आदमी दो जूण री रोटी सारू तरस्यो हुवै। इत्तै बडै मुलक रा मजूरां अर गरीब-गुरबां नै स्वयंसेवी संस्थावां अर सरकार आखिर कित्तोक आटो-दाळ पुगाय सकै। आज चार महीना हुवण नै चाल्या है, पण कोरोना रो न तो कोई परमानेंट ईलाज इजाद हुयो है अर न ई कोई वैक्सीन बण सकी। आ भारत ई नीं विश्व स्वास्थ्य संगठन सारू ई चिंता री बात है। आज आम आदमी राज अर रोग दोनूं सूं डरप्योड़ो है। पछै शिक्षा, साहित्य अर संस्कृति री बात तो तद करीजै जद मन अर तन मांय सोरप अर स्यांति हुवै। इण सगळी अबखाई रो ईलाज सावचेती अर घरां मांय रैयनै रोग सूं बचाव करणो ई रैयग्यो है।

—श्याम महर्षि

ISSN : 2320-0995

संतोष चौधरी

मन रा डोरा

मन उळझ्योड़ै डोरै जैड़ो हुवै है। कदै-कदैई डोरै रो नाको मिल जावै तो कदै-कदैई आखी उमर निकळ जावै इण उळझाड़ सूं निकळण मांय। रिस्तां रा डोरा ई उळझ्योड़ै डोरै जियां कदै तो सुझळै अर कदैई अणसुळझ्या ई रैय जावै।

मोट्यारपणै री औस्था मांय जीवण रो काचो-पाको मारग ई आखी उमर रै अनुभवां मांय अेक रोमांच रो अनुभव तो छोडै ई है, भलांई पछै वौ मारग जीवण री रिंदरोही री भूलभुलैया मांय ई क्यूं नीं गम जावै! पण उण रो अनुभव तो सागै रैवै ईज है।

मिडल क्लास री स्नेहा रो जीवण ई अैड़ी अबखायां सूं न्यारो नीं हो। मिडल क्लास यानी कैय सकां कै वैड़ा परिवार जका नीं तो अपणै आपनै साव नीचा ले जाय सकै अर ना ई अपणै आपनै ठेट ऊपरलै पायंता पर थरप सकै। समाजू प्राणी री सैंग रीत-कुरीतियां नै निभावतो, आरथिक अर समाजू अबखायां सूं पार पावण री जुगत करतो अेक तरियां सूं भेड़चाल मांय घिसटतो परिवार हो, जकै रै दिन री सरुआत मोडा घणा अर मंडी सांकड़ी जैड़ै माहौल सूं सरू होवती ही।

दिनूगै-दिनूगै अेक ई बाथरूम सारू घर रै सैंग मेंबरां री बारी लागणी सरू होय जावती। छोटो भाई कदैई उण सूं पैली बाथरूम जावण री ऋचा करतो, तो बैन आपरै कोचिंग रो हवालो देय देवती, कदेई मां आपरै रसोड़ै रा काम मांय मोड़ौ हुवण रो कैयनै पैला बाथरूम काम मांय लेवती। नैछै सूं दो लोटा पाणी आपरै डील माथै ढोळनै सरीर मांय आवतै बदळाव नै घड़ी अेक मैसूस करण री मन मांय ई रैवती, क्यूंकै उण बगत ई पापा नै

ठिकाणो :
ए-11, सुभाष एन्क्लेव
पीअेनबी बैंक री गळी
अेयरफोर्स अेरिया
जोधपुर (राज.)
मो. 9571544250

 ISSN : 2320-0995

दफ्तर जावण सारू पैली बाथरूम मांय बड़ण री जल्दी होवती अर मन मसोसनै स्नेहा नै ई थ्यावस राखणो पड़तो।

घर रै अेक तोलियै, अेक कांगसियै, अेक तेल री सीसी मांय सूं सगळां रो सिरोळो काम चालतो। मां री बणायोड़ी रालियां-गूदड़ां सूं मंझ सियाळौ निकळतो। उन्हाळै रा दिनां मांय आधा जणा डागळै माथै, तो आधा पंखै हेठै निकाळता। भराळो तो भाग धरती सारू हुवै पण उणां सारू तो आधी रात रो रातीजोगो अर माछरां रो मिजबान हो। मां री खेचळ रैवती कै टाबरां नै सोरा राखै, पण वांरी हालत तो आ ही कै छोटी चादर सूं मूंडो ढकै तो पग उघड़ जावै अर पग ढकै तो मूंडो उघड़ जावै।

खींचताण रै जीवण मांय बस सगळा टाबर भणबा मांय मैणती हा तो आगै सूं आगै स्कोलरशिप मिलती गई। स्कूल री भणाई पूरी हुई अर कॉलेज रा पगोथियां माथै स्नेहा आपरो पैलो पग धर दियो हो। स्कूल रै अनुसासन सूं निकळनै अबै हवा मांय उडण रा दिन हा। आसै-पासै जाणै रंग-रंगीली तितलियां रो उडणो हो तो भंवरां री भणकार ई सागै ही। अैड़ा ईज सुपनां रा दिनां मांय जीनत सूं नीं जाणै कियां स्नेहा री दोस्ती बैठगी। बोलचाल मांय अदब अर तहजीब वाळी जीनत नै ई स्नेहा रो धीमो सुभाव अर भणाई मांय जीव देवणो आछो लाग्यो हो। जीनत खुद ई भणाई मांय मैणती ही अर आपरै काण-कायदै नै समझण वाळी छोरी ही।

जीनत अेक दिन स्नेहा नै आपरै घरै लेयगी। घर नीं, कोठी कैय सकां। बडो-सो बगीचो, बडी-सी बैठक, खुल्लो बरामदो, अैंटिक फर्नीचर सूं सज्योड़ो सारो घर जाणै कोई स्यानदार होटल सो लागै हो। जीनत रो खुद रो पर्सनल कमरो हो। वा स्नेहा नै बठै ई बैठायनै पाणी पायो अर नास्तो लावण रो कैयनै रसोड़ै मांय गई। स्नेहा अचंभै सूं जीनत रै सजायोड़ै कमरै नै देखै ही। भणण री टेबल, किताबां करीना सूं राख्योड़ी, बडै सारै पिलंग माथै फूठरी चादर बिछ्योड़ी, तकिया-कुसन सजायोड़ा, साईड री टेबल माथै लैंप, कालीन अर सजावटी तस्वीरां सूं त्यार कमरै नै वा आंख्यां फाड़नै अचूंभै सूं देखै ही।

अचाणचक दरवाजै माथै किणी रै आवण री आवाज आई। स्नेहा थोड़ीक संभळनै बैठी। आपरै गाभां अर रूप-रंग माथै संकोच सूं भरयोड़ी वा जीनत सूं जाणै आपरी होड करै ही—कठै फूठरी-फर्री गोरीगट, पईसांवाळा परिवार री जीनत अर कठै वा साधारण रंग-रूप, साधारण परिवार वाळी छोरी। भणाई मांय जीनत हुंसियार ही। भायलीपणा रै कोई हिसाब मांय वा अपणै आपनै जीनत रै बरोबर नीं समझै ही। दरवाजो खुलण री आवाज सागै ई मोट्यार री आवाज सुणीजी, ''जीनत...!'' पण स्नेहा नै बैठी देखी तो अचकचायनै पूछ्यौ, ''आप कुण, अठै... ?''

स्नेहा घबरायगी।

''म्हैं जीनत रो भाई सुहैल हूं, आप स्यात स्नेहा हो... ?''

''स्यात नीं, स्नेहा ईज हूं म्हैं।'' स्नेहा संको करती-सी बोली।

''जीनत आपरै बारै मांय केई बार बात करै, अबार कठै गई है वा?''

''रसोड़ै मांय गई है'' ...इत्तो ई पड़ूत्तर दिरीज्यो स्नेहा सूं।

सुहैल सांवळी रंगत, आछी कदकाठी रो। आंख्यां माथै निजर रो चस्मो अर ब्रांडेड ड्रेस मांय त्यार हुयोड़ो स्नेहा रै साम्हीं ऊभो हो। स्नेहा धूण नीची घाल्यां बैठी ही। आज उणनै आपरै पगां री चामड़ी मैली अर गाभा बोदा लागै हा। आज कोई उणरै साम्हीं हो जकै सूं वा अपणै आपनै जोखै ही... खुद नै अैड़ी सोच सागै वा आज सूं पैलां कदैई नीं जोखी ही।

''पढाई कैड़ीक चालै?'' सहैल पूछ्यो।

''ठीक ई चालै।''

''जीनत कैड़ी है पढाई मांय?''

''बौत आछी है।''

''आपरी भायली री कुण बुराई करै! क्यूं... ?'' सुहैल मुळक्यो।

''नीं, अैड़ी बात कोनी।'' स्नेहा संकती-सी बोली।

इत्ती देर मांय ई जीनत नास्ता री ट्रे लेयनै कमरै मांय आई। मिठाई, नमकीन, गुंजिया, मठरी अर नीं जाणै और कित्ता अटरम-सटरम सागै भरयोड़ी ट्रे नै टेबल माथै राखती बोली, ''आप सही टेम माथै आया हो भाईजान!''

''क्यूं कांई हुयो?'' सुहैल पूछ्यो।

''हुयो तो कीं नीं, म्हैं अर स्नेहा नास्तो करां जित्तै आप आईसक्रीम लेय आवो नीं...।'' जीनत हेत सूं भाई नै कैयो।

''अरे नईं भई, म्हनै काम है।''

''प्लीज भाईजान...''

''ठीक है, बता, कुणसो फ्लेवर लावूं।''

''बता स्नेहा, थनै कांई पसंद है?'' जीनत पूछ्यो।

कांई बतावती स्नेहा। कोई फ्लेवर कणैई ट्राई करयो हुवै तो ध्यान हुवै नीं। आईसक्रीम ई कदैई मिल जावती खावण सारू तो वा ई घणी में ही।

''जकी थनै दाय हुवै।'' स्नेहा धीमै-सी बोली।

''ठीक है, म्हैं ब्लेकफोरेस्ट लावूं।''

''जो आपनै आछी लागै, लेय आवो भाईजान, पण आईजो बेगा।''

सुहैल रै गयां पछै स्नेहा जीनत रै कैवण सूं अेक प्लेट मांय मिठाई रो पीस अर थोड़ी-सी नमकीन लेय ली। जीनत ओजूं मनवार करती रैयी, पण मन होवता थकां ई वा संकै मांय और कीं नीं लियो। सुहैल आईसक्रीम ले आयो अर वा खावती बगत स्नेहा

 ISSN : 2320-0995

सोचै ही कै जीवण मांय पैली बार इत्ती स्वाद आईसक्रीम खाई हूं। जीनत रै रैण-सैण रै तौर-तरीकां सूं स्नेहा समझगी ही कै वा बौत पईसां वाळी बडै खानदान री है। पाछी जावती बगत जीनत आपरी अम्मी सूं स्नेहा नै मिलवायी, पण वा निजर मिलायनै स्नेहा सूं बात नीं करी।

जीनत सुहैल नै कैय दियो कै स्नेहा नै उणरै घरै छोडनै आय जावै। स्नेहा मना करती रैयी, पण जीनत री जिद रै आगै उणरी अेक नीं चाली अर सुहैल उणनै आपरी बाईक सूं घरै छोडनै आयो। आपरी घर री गळी आवण सूं पैलां ई स्नेहा बाईक रोकायनै उतरगी अर 'थैंक यू' कैयनै आपरै घर री गळी मांय बड़गी। परिवार रै लोगां रै पचास सवालां सूं बचण सारू अर आपरै छोटै सै घर री सरम सूं वा सुहैल नै घरै आवण री मनवार ई कोनी कर सकी।

आज स्नेहा नै आपरो घर छोटो, सूगलो अर अस्त-व्यस्त लागै हो। वा अपणै आपनै बौत छोटी मैसूस करै ही। रात जद सैंग जणा अेक कमरै मांय सूता तो स्नेहा नै जीनत रो सज्यो-संवरयो कमरो याद आयग्यो। सुहैल सागै बाईक माथै उणरै लारै बैठनै घरै आवणो याद आयग्यो... नीं जाणै कैड़ौ सौरमदार इत्र लगायोड़ो हो सुहैल रै, जको पूरै मारग हवा नै ई मैकाय दी ही। स्नेहा संकै मांय थोड़ी छेती सूं बैठी ई... कठैई आपरी मांय सरीर टच नीं हुय जावै। वा आपरै मोहल्ला वाळां री सोच नै जाणती ही। बातां रा गूंगदा इत्ता बेगा बणै कै बदनामी मिलतां जेज कोनी लागै अर कठैई घरै ठाह पड़ग्यो तो भणाई छूट जाय जकी अलग... बियां ई उण रो अर सुहैल रो कोई इण तरै सूं कोई मेळ तो है कोनी—न जात धरम, न रैण-सैण। ठंडी उसवास भरनै स्नेहा पसवाड़ा फोरती कणै सोयगी, उणनै खुद नै ई ठा नीं पड़्यो। उठी तो आंख्यां अर माथो दोवूं भारी हा, जाणै कित्तो ई बडो सुपनो देख लियो अर जकै रो बोझो आंख्यां मांय कम अर अंतस मांय ज्यादा हो।

हफ्तै भर पछै ई अेक दिन जीनत भळै स्नेहा नै आपरै घरै बुलाई, पण वा ओळावो लेय लियो कै बारै जावणौ है। सताजोग सूं उण दिन ई सुहैल स्नेहा नै मारग मांय मिलग्यो।

''अरे! आप तो अठै ई हो?'' पूछ ई लियो सुहैल।

''कांई मतलब?'' स्नेहा बोली।

''जीनत बतावै ही कै आप बारै जावण वाळी हो।'' सुहैल पडूत्तर दियो।

''हा, वो जावणो कैंसिल हुयग्यो।'' स्नेहा आपरी बात नै कवर करी।

''आपनै ठा है, वा आपनै क्यूं बुलावै ही?'' सुहैल पूछ्यो।

आंख्यां मांय सस्सोपंज लियोड़ी स्नेहा सुहैल साम्हीं झांक्यो।

''क्यूंकै म्हैं अेक हफ्तै पछै जॉब सारू बंगलौर जावूं, पछै यू.अेस.। आपनै पारटी देवण री मंसा ही, म्हारी अर जीनत री...'' मुळकतो थको सुहैल बतायो।

''ओह! बधाई हो सा...।'' फीकी मुळक सागै स्नेहा बोली।

''कोरी बधाई, चाय-मिठाई कीं नीं?''

''फेर कदैई...'' कैयनै स्नेहा बठै सूं टळणो चावै ही। वा कांई कैवती! हाथ मांय अेक टेम री साग-सब्जी रा पईसा हा। वै ई खरच देवती तो घरै कांई कैवती अर साग कीकर ले जावती?

''फेर कदैई क्यूं? म्हनै तो आप आज ई चाय पिलाओ।'' कैयनै सुहैल साम्हीं ई रेस्टोरेंट चालण सारू स्नेहा नै सानी करी। मन री धुकड़-पुकड़ नै कंटरोल करनै हाथ रा पईसां नै मुट्ठी मांय काठा पकड़ती स्नेहा सुहैल सागै रवाना हुयगी। रेस्टोरेंट रो गेट खोलतां ई आवतै ठंडै बायरै सूं मन नै थोड़ी राहत मिली। बारै बियां ई बळती रा छपटा चालै हा।

सुहैल मीनू कार्ड हाथ मांय लेवतो स्नेहा नै पूछ्यो, ''कांई ओर्डर करूं?''

''कीं भी...'' मुट्ठी मांय आवतै पसीनै नै मैसूस करती स्नेहा पड़ूत्तर दियो।

''मंचूरियन, चाऊमिन या कीं और?'' सुहैल पाछो पूछ्यो।

''आपनै जको ठीक लागै...''

''फेर ई...?''

''म्हनै तो अैड़ी चीजां भावै कोनी...'' हिम्मत करनै स्नेहा बोलगी। साच बात तो आ ही कै वा अैड़ी चीजां खाई ही कद ही जको चोखी-माड़ी रो सवाल उठतो।

''तो आपनै कांई भावै... बतावो?'' कैवतो सुहैल मीनू कार्ड स्नेहा साम्हीं कर दियो।

स्नेहा मीनू कार्ड मांय सै सूं सस्ती चीज इडली देखनै इडली ओर्डर करी। सुहैल आप सारू पसंदीदा ब्लेकफोरेस्ट आईसक्रीम ओर्डर करी।

दोनूं आम्हीं-साम्हीं बैठा हा, पण बंतळ रो कोई नाको पकड़ मांय नीं आवै हो। अम्मी कीकर है, जीनत कीकर है, जीनत री कोचिंग कीकर चालै... बस अैड़ी ई अनौपचारिक बातां मांय स्नेहा हां-हूं करै ही।

सुहैल आपरी रौ मांय ई आपरी जॉब अर पैकेज रै बारै मांय स्नेहा नै बतावै हो। बढिया पैकेज मिल्यो है। थोड़ाक बरसां पछै फॉरेन गयां और बढिया पैकेज मिलसी।

''इत्तो कमायनै कांई करसो आप?'' सुहैल री बात सुणनै स्नेहा बोली।

''मौज करसां, मौज स्नेहा जी।'' सुहैल री आवाज मांय अेक अजीब-सी चमक अर नसौ हो। स्नेहा अपणै आप मांय देखनै धूण नीची घाल ली।

वेटर बिल लायो तो सुहैल पेमेंट रै सागै पचास रुपिया टिप रा ई देय दिया। स्नेहा नै थोड़ो सांस आयो। स्यात उणनै बिल देवणो पड़्यो तो...? घरै पईसां रो हिसाब कांई बतावती? आ सैंग उळझाड़ उण सारू नूंवी नीं ही। वा अठै सूं जाणै भाग जावणो चावती ही। इण मोहजाळ सूं दूर कठैई अेकांत मांय। रेस्टोरेंट सूं बारै आया तो वा ईज गरमी अर उमस ही। वा जावण सारू मुड़ी तो सुहैल पूछ्यो, ''फेर कद मिलसो स्नेहा जी?''

 ISSN : 2320-0995

''क्यूं ?'' बस इत्तो ई बोली स्नेहा।

''स्नेहा जी, आप जीव रा बौत काठा हो। न कीं बोलो, न कीं पूछो, न ई खुलनै हंसो। इयां वैवार करो जाणै हरेक चीज रा पईसा लागसी, जाणै थारै काळजै माथै कोई भार राख्योड़ो हुवै, अैड़ो क्यूं है ?'' सुहैल कैय ई दियो।

''नीं, अैड़ो कीं नीं है।'' कैयनै ठीमरपणै सूं स्नेहा पाछी मुड़गी।

निजरां रो परस आपरै मौरां माथै मैसूस करती वा जीव नै करड़ो कर लियो। जकै मारग जावणो नीं, उण रो पतो क्यूं पूछणो ? उण इणनै आगै जीवण रो अेक ध्येय ईज बणा लियो।

गरीबी, जरूरतां नांव रै रागस नै आपरी जिंदगी री डिक्शनरी सूं हटावण रो अर उण रो अेक ईज तरीको हो—अणूती मैणत, भणाई अर लक्ष्य सारू कोन्सट्रेट। रात-दिन जुटगी वा आपरै प्रयासां मांय।

पण परिवार री ई आपरी मजबूरियां ही। वां कनै प्रतियोगी परीक्षावां रै फार्म भरण सारू ई पईसां री ऊळाई नीं ही। वै आपरा हाथ ऊभा कर दिया। अैड़ा माड़ा टेम मांय जीनत ई उण सारू आधार बणनै आयी। उधारी रै नांव माथै वा स्नेहा नै मदद करती अर आगै पढण सारू हूंस बधावती। स्नेहा नै ठा हो कै आ उधारी नीं है। अेक दोस्त री दूजै दोस्त सारू बिना स्वारथ करयोड़ी मदद है।

जीनत सूं वा मिलती जद ई जीनत बातां-बातां मांय सुहैल रो प्रसंग लेय आवती। दोयां रै मन रा भाव समझती थकी ई स्नेहा आपरै जी नै करड़ो कर लेवती। परिस्थितियां उणनै वैवारिक बणाय दी ही अर जीवण रै उद्देस्य सूं वा भटकणो नीं चावै ही।

परिवार स्नेहा रै मनगत नै नीं समझ सक्यो। पिता सोच ई नीं सक्या कै वा कांई चावै है... मां रो हमेस अेक ई उपदेस होवतो ''बेटी, आपरी इज्जत पर आंच मत आवण देई !'' आ इज्जत कांई है, वा समझ नीं सकी। किण इज्जत री बात करै ही मां ? फकत आपरै सरीर माथै कोई और नै नीं चढण देवणो ई वांरी निजर मांय इज्जत रै मापदंड मांय आवै कांई ?

जीवण री रेस मांय आपरी पूरी ताकत सूं स्नेहा रेस लगाई अर इत्ती तेज रेस लगाई कै सैंग लारै छूटग्या। परिवार री हालत सुधरगी। छोटा भाई-बैनां रा ब्यांव हुयग्या। वै आपरी घर-गिरस्थी मांय रमग्या। स्नेहा री पूरै परिवार बिचाळै बोहळी इज्जत ही। पुराणै मोहल्लै रै छोटै सै घर सूं अब वै बढिया कॉलोनी रै बडै घर मांय रैवास कर लियो। गाडी-नौकर सैंग सुविधावां सूं भरयो पूरो घर हो। स्नेहा बडी अफसर बणनै दूजै स्हैर मांय सरकारी बंगला मांय रैवती ही। महीनै, दो महीनै सूं अेक-दो चक्कर घर रो निकाळ लेवती। अेकलापा रो घेरो वा आपरै आसै-पासै बणाय लियो हो। कोई रो ई प्रवेस उण मांय वरजित हो। परिवार आपरी जरूरतां रै आगै स्नेहा रै साम्हीं नतमस्तक हो।

स्नेहा रै लांबा बालां मांय अब बीततै बगत री हळकी सफेदी दीखण लागगी ही, पण मन रो उछाह हाल कोनी सूक्यो हो। पिताजी रिटायर्ड हुयग्या हा अर बेटी नै संभाळण रै बहानै दोनूं मां-बाप उण कनै आयनै आपरै चार धाम री जात्रा री मंशा प्रगट करग्या हा। स्नेहा उणरी ई व्यवस्था कर दी ही। स्नेहा रै भविस री या ब्यांव री कोई चरचा, प्रसंग नीं छेड़्यो हो। वा आगै कांई करसी, किणनै ई कोई मतलब नीं हो।

मन रा उळझ्योड़ा जाळ अैड़ा ईज हुवै है। उळझो जित्ता ई उळझाड़ औरूं बधतो जावै। अेकलापो अब स्नेहा नै खावण लागग्यो हो। जीनत रो ब्यांव हुयग्यो हो। अेक टाबर री मां बणनै वा आपरी गिरस्थी मांय मस्त ही। सुहैल ई ब्यांव कर दुबई शिफ्ट हुयग्यो हो। जीनत केई वेळा कैवती कै थारै सूं मिलण नै आवूं, पण आई कदैई नीं।

"म्हारो ई तो जीवण है? म्हैं क्यूं नीं मनमाफिक जी सकूं? विदेसां मांय तो इण उमर में लोग आपरी गिरस्थी सरू करै? भारत मांय चरितर रो प्रमाण फकत बिस्तर नै क्यूं मानै है? जे अैड़ो कीं होय जावै तो कांई उणरै चरितर माथै या ईमान माथै कोई फरक पड़ै कांई? क्यूं इत्ती वरजनावां रै बिचाळै जीवण सारू मजबूर कर्‌यो जावै है?" अैड़ा विचारां सूं स्नेहा औकचौक होय जावती।

स्नेहा रै दफ्तर मांय अेक मोट्यार हो। उमर स्नेहा सूं छोटी ई ही। अेकदम मस्तमौला टाईप रो। सैंगां नै बतळावणो, हमेस कीं न कीं गुणगुणावणो। दफ्तर रै काम मांय परफेक्ट। कुल मिलायनै खुशमिजाज अर मैणती मोट्यार हो। घणी बडी पोस्ट माथै कोनी हो, पण रैण-सैण सूं स्मार्ट लागतो हो। स्नेहा केई दिनां सूं नोट करै ही कै वौ उण मांय बेसी रुचि राखै है। दफ्तर मांय भय्या दीदी वाळो कोन्सेप्ट स्नेहा कदैई कोई सागै ई आवण ई कोनी दियो। वैवार री पक्की अर प्रैक्टिकल बात ई राखती ही।

स्नेहा नोट कर्‌यो कै वौ स्नेहा री बात रो विसेस ध्यान राखतो हो। या स्यात स्नेहा ही उण सूं प्रभावित होयनै उण मांय सुहैल रो उणियारो सोधती ही। भलां ई सुहैल अचाणचक स्नेहा रै जीवण मांय आयो हो, पण उणरै दूजै धरम रो हुवण रै कारण अर दोनुवां रै बिचाळै रैण-सैण रै बोहळै फरक रै कारण स्नेहा कदैई सुहैल नै स्वीकार नीं कर्‌यो हो। वा जाणती ही कै सुहैल सैपियोसेक्शुअल है। अैड़ा मिनख हुंसियार, समझदार लोगां रै अलावा और कोई सूं ई प्रभावित नीं हुवै। सुहैल कदै-कदैई अैड़ा विसयां माथै बहस करतो कै स्नेहा रो ई माथो चकराय जावतो। उण टेम वा आ बात समझ नीं सकी ही, पण आज लागै कै स्यात सुहैल उणरै जीवण मांय हुवतो, उणरै सागै हुवतो तो वा उण सूं बहस करती। कोई बात माथै तरक करती। कोई नूंवी बात सीखती। जीवण मांय खट्टी-मीठी मिठास हुंवती। पण खैर!

पण कांई! इण मोट्यार मांय वा सुहैल री खासियतां सोध रैयी है। सुहैल जैड़ी समझदारी इण मांय हुवै या स्यात देह रै लगाव टाळ सब जीरो है। तो कांई भणी-गुणी,

थोड़ीक बडी उमर री लुगाई प्रीत नीं कर सकै? खुलनै प्यार करण री कामना नीं राख सकै? क्यूं? दुनिया अेक लुगाई सूं ई क्यूं आ आस करै कै वा अेक परिपाटी री ई पालना करै? लुगाई रो समरपण ई क्यूं सीमावां मांय बंध्योड़ो हुवै? कांई इण मोट्यार सूं ब्यांव कर लूं? पण ब्यांव ई क्यूं? फकत प्रेम नीं कर सकूं कांई? उणनै प्रेमी बणा लूं तो? म्हैं ई स्वतंत्र अर वौ ई स्वतंत्र! समाज कांई कैयसी? पण क्यूं कैवैला? जीवण आपरै तरीकै सूं जीवणै रो सैंगां नै अधिकार हुवणो चाईजै!

अंतस री कामनावां जद उपरा कर फिरै तो बारै ई आवण लाग जावै। हुयो ई बियां ई। स्नेहा नै लाग्यो कै वा खुद वास्तै कद जीवणो सरू करसी? जकै पद पर आज वा है, वा कोई नै आपरै मन रा भाव बता ई तो नीं सकै। वौ ई मोट्यार कोई काम सूं फाईल लेयनै स्नेहा कनै आयो। स्नेहा फाईल देखनै आपरै हिसाब सूं उणनै प्रोजेक्ट माथै सलाह देय दी, पण मन रै विचारां रा घोड़ा स्नेहा रै दिमाग मांय दौड़ै हा कै औ मोट्यार उण सागै रिस्तो जोड़ै तो कीकर वैवार करसी... कांई वा खुद पाछो वैवार करसी?

फाईल लेयनै वौ जावण लाग्यो, पण दो मिनट सूं ई पाछौ मुड़नै स्नेहा नै पूछ बैठ्यो, ''आपरी तबीयत ठीक कोनी लाग री है, सब ठीक तो है नीं?''

''ठीक तो हूं पण बिल्कुल ठीक कोनी।'' स्नेहा पड्डूत्तर दियो।

''म्हारै लायक कोई काम हुवै तो बेहिचक कैयीजो...'' वौ पाछौ बोल्यौ।

''जे सिंझ्या नै फ्री हुवो तो...!'' स्नेहा कैयो।

''हां-हां, फ्री ई हूं?'' उतावळो-सो आंख्यां मांय चमक लावतो वौ बोल्यो।

''म्हैं घणकरी साढी छह पछै फ्रिगो मांय मिल्या करूं हूं।'' स्नेहा यूं बोली जाणै उमर रै बीस बरसां रो सफर पाछो मोड़नै सुहैल सूं बात कर री हुवै।

''म्हैं मिलूं आपसूं!''

''ठीक है...'' स्नेहा बोली।

मोट्यार कैबिन सूं बारै निकळग्यो।

स्नेहा रै मन मांय घाण-मथाण सरू हुयगी। कठैई उणरी आ पैल बरसां री मरजादा नै नीं बिखेर देवै? ...कठैई औ इण बात रो फायदो तो नीं उठावैला? ...नीं...नीं, फायदो कियां उठा सकै? ...नीं जाणै क्यूं जिवड़ो डगमगाट करै हो। घड़ी मांय हाल तीन ई बजी ही। टेम काट्यां नीं कटै हो। वा आज स्यात जीवण भर आपरै हिसाब सूं इण टेम नै भरपूर प्रेम सागै जी लेवणो चावै ही। कित्तै बरसां सूं मन नै अेक खोळ मांय लुकायां राख्योड़ो हो। आसै-पासै मोटी-मोटी भींतां रो घेरो करनै मन रा उछाह नै मेट राख्यो हो। प्रेम री नदी सूकनै उण माथै जाणै पापड़ी जमगी ही, पण आज उण प्रेम रूपी नदी रै बांध नै खोलनै कळकळ रो सुर सुणण सारू जी हिलोरा लेवै हो।

दफ्तर रो टेम पूरो होवतां-होवतां स्नेहां घर सारू निकळनै थोड़ी ठीक-ठाक त्यार होयनै फ्रिगो रेस्टोरेंट आयगी। वौ उणनै गेट माथै ईज मिलग्यो हो।

अबै वा उणनै थोड़ो गौर सूं देख्यो। ठीक-ठीक कद-काठी रो। जिंस-टीशर्ट मांय वौ स्मार्ट लाग रैयो हो। टीशर्ट रा ऊपरला बटण खुल्ला हा अर मधरी महक सूं स्नेहा रै अंतस मांय रोमांच री लैर दौड़गी ही। स्नेहा नै देखनै वौ खुसी मांय मुळक्यो... रेस्टोरेंट मांय बैठती बगत वौ अचंभै सूं आपरै आसै-पासै री सैंग चीजां नै देखै हो। स्नेहा नै सुहैल सागै आपरो रेस्टोरेंट जावणो याद आयग्यो। कोफी रै ओर्डर सागै वै दोनूं हळकी-फुळकी बातां करण लागग्या। कोफी खतम हुयां पछै स्नेहा पूछ्यो, ''टेम है तो पिक्चर देखां?''

''हां-हां, बिल्कुल।''

मल्टीप्लैक्स मांय लाग्योड़ी पिक्चर देखती बगत दोयां रा हाथ जाण-बूझनै स्यात अणजाणै मांय ई टच हुया तो ई स्नेहा आपरै हाथ नै हटायो कोनी। पिक्चर पछै सागै ई डिनर करनै दोनुवां रै आप-आपरै घरै जावण रो टेम हुयो तो वौ हिचकतो बोल्यो, ''बस, चालूं?''

''हां, क्यूं? और कीं बात?'' बात स्नेहा अधबिचाळै ई रोक दी।

म्हैं सोचै हो, रात बोहळी हुयगी है, आपनै घर तांई ड्राप कर देवतो...।'' वौ आवाज मांय मद घोळतो बोल्यो।

''ओके...'' स्नेहा खुद आज सैंग बंधण काट देवणा चावै ही। सैंग वरजनावां तोड़ देवणी चावै ही।

स्नेहा गाडी खुद चलावै ही। वौ बरोबर री सीट माथै बैठग्यो।

''स्नेहा जी, आज री सिंझ्या जीवण री यादगार सिंझ्या बणगी है।''

''हम्म, अच्छा...''

''हां, जठै म्हैं कदैई जावण री सोचतो, जकी होटल नै बारै सूं देखतो, आज बठै डिनर कर्‌यो, थैंक यू।''

''वौ तो ठीक है, पण औ थैंक यू-वैंक यू रैवण द्यौ।''

''ओके...'' वौ खिड़की रो काच खोल दियो। बायरै री ठंडक मांय तक आयी।

घरां जावण वाळै लांबै मारग माथै स्नेहा गाडी आगै बधाय दी। च्यारूंमेर सून्याड़ हो। बायरै मांय जाणै नसो तारी हुयग्यो हो। उण रो हाथ स्नेहा री साथळ नै होळै सै पंपोळतो अबै गळै रै ओळै-दोळै हो। हळवीं नसीली सिहरण-सी स्नेहा नै मैसूस हुई। गाडी धीमी गति सूं अणजाण मंजल नै सोधती चालै ही।

मोड़ पर गाडी रोकनै स्नेहा उणरी आंख्यां मांय देख्यो। आंख्यां मांय जाणै मद रो नसो हो। स्नेहा नै संपूरण पावण रो आग्रह हो। इण टेम स्नेहा नै ई आकरसण लाग्यो। फकत पुरुस रो, मरद रो आकरसण। वा बिना बोल्यां गाडी नै आपरै घर कानी मोड़ ली।

पूरै मारग पाप-पुन्न, उमर रै फरक अर समाज रै बंधणां रै अलावा वा जाणै कांई-कांई बिचारती गाडी नै पोर्च मांय खड़ी कर दी। गेट खोलनै दोनूं घर मांय आया। बैठक देखतां ई वौ बोल्यो, ''वाह! कित्तो स्यानदार घर है।''

स्नेहा मन ई मन गुमेज सूं भरीजगी। वौ स्यात स्नेहा रै बीत्योड़ा दिनां जैड़ी परिस्थितियां मांय आज हो, पण पूरै आतमविस्वास सूं वौ फ्रीज खोलनै पाणी पीवण लाग्यो। स्नेहा फ्रेश हुयनै आयी जित्तै वौ टीवी ई ऑन कर दी। स्नेहा नै मन मांय खुसी मिली, पण छिण भर मांय सही-गळत री तराजू मन मांय आयगी। मन मांय आवता सही-गळत रा विचारां नै अेकै पासै करनै वा आपरै बारै मांय सोचण लागगी। उमर रो अेक पूरो पड़ाव सही गळत री तौल-ताल मांय ई निकळग्यो हो। खुद वास्तै कीं सोच्यो ई नीं हो। सुहैल रै मन सूं जाणनै अणजाण बण्योड़ी रैयी।

रात रा ग्यारह सूं बेसी बजग्या हा। आंख्यां मांय नींद मैसूस हुवण लागगी ही। स्नेहा आपरै बेडरूम मांय जावण सारू व्हीर हुयी, ''आप कठै सोवौ?'' वौ पूछ्यो।

''म्हैं मांयनै बैडरूम मांय आप अठै ई सोय जावो।''

''ना-ना, म्हनै अेकला नै डर लागै।'' कैयनै मुळकतो-सो वौ स्नेहा रो हाथ पकड़ लियो।

स्नेहा बैड माथै आयगी। वौ सैंग ई चीजां अचंभै सूं देखै हो। स्नेहा उणरै चेहरै माथै आयै मन रै भाव नै देखनै सुखद अनुभूत सूं भरीजै ही। पण वौ पुरुस हो अर अपणै आपनै कठीनै सूं ई कम नीं समझै हो। स्नेहा तो जीनत रै घरै आपरी कमतरी रै अैसास सूं ई जमीन मांय गड जावती, आपरी गरीबी रो अणूतो ई उणनै बुरो मैसूस हुवतो।

बैडरूम री रोसनी बिल्कुल मंधम कर दी ही। वौ स्नेहा रै कनै आयनै सूयग्यो हो। उणरी सांस रै उतार-चढाव अर गरमास नै स्नेहा मैसूस करै ही। स्नेहा उणरी पैल नै उडीकै ही। स्नेहा सारू औ पैलो अनुभव हो... वौ अेक नूंवै उणमाद सूं भरीज्योड़ो हो। स्नेहा नै उण रो उणमाद भलो लागै हो। तेज आंधी मांय जियां लतावां रूंखां रै आसै-पासै काठी विलूंब जावै, स्नेहा ई उणरी छाती सूं कसनै लिपटीजगी ही। स्नेहा जाणै उण सूं पांच-सात बरस छोटी बणगी ही। वौ बरसाती बूंदां ज्यूं स्नेहा रै पूरै सरीर माथै व्हालां री बरसात करै हो। हरेक व्हालै सागै स्नेहा री सिसकियां कमरै मांय अेक मधरै सुर-सी सुणीजै ही। प्रेम रो नूंवो आणंद आज स्नेहा नै मिलै हो। अेक-अेक व्हालै सागै हांफतो-सो, नैड़ो आवतो वौ नीं जाणै कवि... कविता... रो नांव लेयनै अेक कदम आगै रै जोस मांय स्नेहा सागै बधै हो। कवि... कविता? पण म्हैं तो स्नेहा हूं?... स्नेहा सुणनै अणसुणो कर दियो। उण सूं लिपटीज्योड़ी उणरै अेक-अेक प्रेम रो पडूत्तर दुगणै प्रेम सूं देवण लागी। होळै-होळै स्नेहा थाकण लागगी। लाख जतन कर्‌यां ई स्नेहां रै होठां सूं कीं सबदां री बुदबुदाहट होवै ही... कांई हो, स्नेहा नै चेतो नीं रैयो।

जोस री आंधी बीतगी ही। थाकनै दोनूं बेचेतै मांय सूत्या हा... जाणै रात खतम नीं हुवै।

स्नेहा बोली, ''आ कविता कुण है?''

''आप कियां जाणो?'' वौ अचंभै सूं पूछ्यो।

''पैली थे बतावो, कुण है?''

''घरवाळी है म्हारी, बौत प्रेम करै वा म्हारै सूं...''

''अर थे?''

''अेक टेम पछै तो अणजाण आदमी सागै रैवै तो ई हेत हुय जावै, पण आप कियां पूछो?''

''क्यूंकै थे उण रो नांव लेयनै अबार म्हारै सागै हा।'' स्नेहा दो-टूक कैयो।

''ओह!'' अर वौ उठनै गाभा पैरतो बोल्यो, ''म्हैं जावूं अबै, बोहळो टेम हुयग्यो है, कविता अडीकती व्हैला म्हनै।''

स्नेहा रो काळजो मूंडै आयग्यो। इत्ती देर कांई हो तो, वौ जको प्रेम देवै हो। वौ तो उणरी पांती रो हो, जको वौ म्हनै अैसान रूप मांय बस दे दियो हो।

स्नेहा कीं नीं बोली। उण रो अधिकार ई नीं हो। वा तो उणरी जोड़ायत ही, समाज रा कायदा सूं घरवाळी ही। वा तो कीं छिणां रै प्रेम री भागीदार बणी, स्यात जियां रक्कासा व्है, पण पछै स्नेहा नै मन मांय ई हांसी आयी, रक्कासा तो आज वौ हो, स्नेहा नीं।

घर रै गेट तांई स्नेहा उणनै छोडण नै आयी। गेट सूं बारै निकळतो वौ पाछो मुड्यो। स्नेहा नै आपरी बाथां मांय भरतो होठां माथै अेक मीठो व्हालो देवतो बोल्यो, ''स्नेहा जी, औ सुहैल कुण है?''

''कांई?'' अचकचाट मांय स्नेहा रै मूंडै सूं इत्तो ई बोलीज्यो।

''आप म्हनै सुहैल रै नांव सूं ईज प्रेम रो पड़ूत्तर देवै हा। कांई इत्तो प्रेम करता हा सुहैल सूं। काश! आज आप म्हारै आपै सूं प्रेम करता तो जीवण री आ रात अमर हुय जावती।''

दो छिण स्नेहा रै पड़ूत्तर नै अडीक्यो। पछै कोई पड़ूत्तर नीं मिल्यां वौ 'बाय, गुडनाइट' कैवतो आपरै मारग ढळग्यो।

स्नेहा पाछी बैडरूम मांय आयी। कीं टेम पैलां अठै कोई रै होवण रो अैसास हो, कुण हो? सुहैल या... ?''

वौ आपरी पांती रो प्रेम नीं दियो अर स्नेहा आपरी पांती रो... तो हिसाब बरोबर हुयग्यो हो। पण जीवण रो हिसाब इत्तै सौरै-सांस पूरो हुवै कांई? ...जीवण इत्तो सरल हुवै कांई? ...मन उळझ्योड़ै डोरै जियां हुवै। उण रो अेक नाको कठैई हुवै तो दूजो अंतस मांय ऊंडो, ठा नीं कठै लुक्योड़ो हुवै। मन रा उळझाड़ नै लियोड़ी स्नेहा बिस्तर माथै पड़ी छात रै पंखै नै ताकती मन रै डोरै रै दूजै नाकै नै सोधण री खेचळ करै ही।

❖❖

 ISSN : 2320-0995

माणक तुलसीराम गौड़

बाळसाद

आथूणै राजस्थान रै बिचाळै अेक गांव। लगैटगै छह सौ घरां री बस्ती। घणकरा लोग खेती अर द्राव-ढांढां माथै आपरी रोटी-बोटी रो चेपो चलावै। केई मजूरिया जमानो हुयां चौमासै री रुत मांय खेतां मांय मजूरी करै, नीं जणै पांच कोस अळगै स्हैर रो सरणो पकड़ै। केई पढ्या-लिख्या मिनख देस-दिसावर ई जावै। गांव मांय आठ-दस छोटी-मोटी दुकानां है, जिण मांय घर-घूंती जिंसां मिल जावै। अड़ी-भड़ी मांय काम अटकै कोनी। नीं जणै मोटा-मोटी सामान लोगड़ा स्हैर सूं ई लावै, वौ सस्तो पड़ै इण वास्तै।

गांव रै आथूणै पासै अेक मोटी नाडी अर उण रो आगोर। गांववाळा इण नाडी रो पाणी पीवण मांय काम लेवै। जे उण मांय पाणी हुवै तो, नीं जणै लगैटगै सगळा घरां में पाणी रा टांका है, जिणनै आपां होद ई कैवां। इणी नाडी रै आगोर मांय साटियां रो अेक डेरो आयो है, गांव रै उतरादै पासै सूं। आगै-आगै अेक ऊंठ है जिणरै माथै अेक लांठी-सी छाटी है, जिण में अेकै पासै ऊंठ री नीरणी है अर दूजै पासै उणां रो घर-घूंती रो सामान, जिण मांय आटो अर दळियो करण री घट्टी ई है। ऊंठ रै लारै गधा है, जिणां रै मौरां माथै अेक-अेक मांचो है। अेक मांचै माथै च्यार-पांच मुरग्यां बैठी है अर अेक कूकड़ो, गूदड़ा अर कीं सामान इत्याद। दूजोड़ै माथै च्यार-पांचेक टाबरिया बैठा है। कोई नागा-उघाड़ा अर कोई रै फाट्या-पुराणा अर का झीणा गाभा पैरयोड़ा है, जिणां रै ई ठौड़-ठौड़ कारयां लाग्योड़ी। सियाळै रो बगत है। सिंझ्या री आ ई कोई च्यार-पांच बजी हुवैली। झीणी-झीणी उतराध छूट्योड़ी

ठिकाणो :
**नं. 247, दूजो माळो,
नौवीं मेन, शांति निकेतन
लेआउट, अरेकेरे,
बंगलोर 560076**
मो. 8742916957

है। पून मांय जबरी ठंड है, पण आं राम रै बंदां नै ठंड लागै ई नीं का पछै आं रै कनै ओढण-पैरण सारू पूर-पल्ला नीं है या पछै इणां री मांवां लापरवाही बरत रैयी है। इणां रै साथै-साथै अेक डोकरो-डोकरी, दो मोट्यार, दो लुगायां, दो चढती उमर री छोरयां, दो ई कुत्ता अर चार बकरयां है।

वै सगळा आयनै डेरै री जग्यां तै करी। सामान उतारयो जित्तै दिन आथण नै आयग्यो। नैना टाबरिया तो स्याणा-स्याणा अेक जिग्यां बैठग्या अर बाकी रा सगळा जणा आप-आपरै काम-धंधै में लागग्या। अेक मोट्यार ऊंठ अर गधां माथै सूं सगळो सामान हेठ उतारण लागग्यो। अेक लुगाई भाटा भेळा करनै उणां सूं चूल्हो मांड लियो। कीं समझदार टाबरिया आगोर मांय सूं सूकी लकड़्यां, आरण्यां, छाणा, घोचा, सिणिया, कांटा इत्याद चुगण ढूकग्या। बीजोड़ो मोट्यार अेक लुगाई अर दोनूं जवान छोरयां गांव मांय ठंडी-बासी, लूखी-सूखी साग-रोटी अर धान-आटो मांगण वास्तै उंछरागी। डोकरो-डोकरी ई आपरै हिसाब सूं सामान राखै हा अर अेक जणी दूझतोड़ी घोन रो दूध निकाळै ही।

दोयेक घड़ी नै गांव मांय उंछरयोड़ा मोट्यार-लुगाई अर छोरयां पाछा आयग्या। कैया करै है कै फिरै जको चरै अर बंध्यो भूखां मरै। कुवेळा हुयगी ही, तो ई गांव मांय ठंडै-बासी जीमण रो खासा सामान हाथ आयग्यो हो। दूध तातो करनै सूकी रोट्यां उण मांय भिजोय दी। जीमण कीं कमती पड़तो दीख्यो जणै चूल्यो चेतायनै थोड़ो दळियो भळै बणाय लियो। थोड़ो ठंडो अर थोड़ो तातो खाय-पीयनै आपरी मौज-मस्ती मांय आपरी दुनिया में खोयग्या अर सोयग्या।

रोज मांगणो अर खावणो। औ ई इणां रो नितकरम। नीं तो कीं कमती अर नीं कीं बेसी। राई घटै न तिल बधै। दिनूगै उठतां ई झोळी अर ठांव लेयनै बस्ती मांय पूग जावै। मोट्यार-लुगाई न्यारै-न्यारै बास मांय जावै अर दोनूं छोरयां अेकै साथै न्यारै बास मांय। इण तरियां आखो गांव आपरै पगां हेठै खूंद लेवै। आ बात कोनी कै सगळा ई आंनै मांग्योड़ो घालै ई है। कोई घालै अर कोई नीं ई घालै। वा अेक कैबा है नीं :

कोई भाई नटै अर कोई भाई पटै
सगळा ई पटै तो म्हैं घालां कठै ?
सगळा ई नटै तो म्हैं जावां कठै ?

इयां ई अेक दिन री बात। साटियां री लुगाई गांव रै अेक घर री बाखळ मांय पैठी। उण बगत घर रै आंगणियै मांय दादी बैठी आपरै पोतै नै सिरावण करावै ही। उणनै देखतां ई साटणी कैयो, ''राम-राम ओ बाईसा ! सिरावण रो बगत है। च्यारेक आंगळ रोटी दिरावो नीं बाईसा। लूखी-सूकी होसी जिसी ई चालसी बापजी ? डेरै माथै टाबरिया भूखा है।''

सुणनै घरधिराणी मन मारती थकी उठनै रात री बच्योड़ी बाजरी री आधी रोटी लायनै देय दी। आधी रोटी हाथ मांय आवतां ई वा आगै कैयो, ''बाईसा, ठंडी रोटी टाबरां रै गळै कीकर उतरसी, थोड़ो लगावण घालो सा। रामजी थांरी भखारयां भरी राखसी।''

घरधिराणी नै आ दुआ चोखी लागी। काचरां रो साग छमक्योड़ो हो। अेक बाटकी भरनै घाल दियो। पछै वा भळै आपरी मांग राखी, ''बाईसा, आप घणा दयावान हो। थोड़ी छाछ-राबड़ी री मैरबानी करावो नीं बापजी! घणो सांतरो काम हुय जासी। डेरै मांय अेक डोकरियो है, वौ कैयो कै बेटा, कठैई छाछ-राबड़ी हाथ आ जावै तो लाईजै, रोटी कीं तो सोरी गळै उतरसी। उणरै महीनै भर सूं छाछ-राबड़ी हाथ नीं आयी। हाथ आवणो तो घणो हुवै बापजी, दरसण ई नीं हुया। रामजी थांरो बाड़ो द्राव-ढांढां सूं भरयो-तरयो राखसी।''

बात आ ही कै वा साटणी घर री बाखळ मांय अेक दोयेक महीनै रै टोगड़ियै नै कुळाचां मारतां देख लियो अर उणी बगत पागती बाड़ै मांय सुवाड़ी गाय ई रंभावै ही। इत्तो इसारो तो घणो उणनै। कैया करै है कै समझदार नै इसारो ई घणो।

सुणनै घरधिराणी सोच्यो कै छाछ रो कांई माजनो! बापड़ी दूध तो मांग्यो ई कोनी। अेक लोटो छाछ घालनै बावड़वा लागी जित्तैक तो वा बोली, ''बाईसा, थोड़ोक पाणी पावो नीं। तिस्सां मरती रो गळो सूखै है।''

घरधिराणी पाणी पायनै कैयो, ''बाई, थां मंगती जात हो तो जबरी। च्यार आंगळ रोटी रै टुकड़ै री बात ही अर तूं रोटी, लगावण, छाछ, राबड़ी अर पाणी री फरमाइस करती ई जाय रैयी है। आंगळी पकड़ती-पकड़ती पुणचो पकड़ण लागरी है।''

सुणनै साटणी बोली, ''कठै ओ बाईसा, अजै तलक तो कीं ई नीं मांग्यो। इण सूक्योड़ै सोगरै रो कांई माजनो! बाईजी रै रावळै में कांई कमी है। आगो दियां पाछो पड़ै। गोद्यां मांय रमै जिको पोतो अर इण री बीनणी थांरी घणी ई सेवा-चाकरी करसी। बुढापै मांय थांनै अछन-अछन राखसी। ऊभा आरती उतारसी। इयांन ई थे घणा बडभागी हो। मोटा भाग लेयनै इण घर मांय आया हो। अबै फकत बस, अेक बोदो-पुराणो गाभो दिरावो ओ बाईसा! थांनै वौ सांवरो रेसम री रजायां देसी।''

घरधिराणी री मंसा तो कीं कमती ई ही, पण रेसम री रजायां री आसीस सुणनै आपरो पुराणो ओढणो देय काढ्यो। ओढणियो हाथ आयां पछै वा समझगी कै अबै आं तिलां मांय तेल नीं है।

''रामजी थांरो सुहाग अमर राखसी। अन्न-धन रा भंडार भरया राखसी।'' कैवती-कैवती आगलै घरां कानी टुरगी।

अबै वै आजकालै घर बदळ लिया। जिका आथूणै मोहल्लै में मांगण नै जावता वै अगूणै मोहल्लै मांय आवण लागग्या अर अगूणै वाळा आथूणै मांय। कोई कैय देवै कै थे तो नित रा ई मांगण नै आ जावो तो कैय सकै कै वै लुगायां दूजी है अर म्हे दूजी हां।

इयां ई अेक दिन सांमलै घरां उण डेरै री दूजी लुगाई आई। घर री बाखळ में पैठतां ई हेलो मार्‌यो, ''ओ बाई! घर में हो कांई? पायेक बाजरी घालो नीं। डोकरो मांदो है। थोड़ो लूण घालनै दळियो बणायनै उणनै पास्यूं।''

घरधिराणी दयावान ही। पाव ई क्यूं, डोढेक पाव बाजरी घाल दी। बाजरी हाथ आवतां ई वा साटणी आगै बोली, ''बाईसा, कोई जूनी-बोदी साड़ी देवो नीं। सियाळो करड़ो कोजो आयो है। सियां मरतां रा हाड बाजै। धूजणी छूटै। रामजी थांरो भलो करसी।''

जणै घरधिराणी पड़ूत्तर दियो, ''बाई, आटो घाल दियो। जूनी-बोदी साड़ी हुवती तो म्हैं थनै जरूर देवती, पण है कोनी। अबै तूं बीजो घर देख। गांव घणोई मोटो है। कठै न कठैई कोई देय देसी।''

उण बगत वा भिणभिणाटा करती उठगी, पण दूजै ई दिन भळै पाछी आयगी। पैलां तो आटो मांग्यो। आटो घालतां ई पाछा वै ई घोड़ा अर वै ई मैदान, ''बाईसा, कोई फाटी-पुराणी साड़ी देवो नीं। सियाळो हाडका बजाय रैयो है।''

जणै घरधिराणी कैयो, ''बाई, थोड़ो भरोसो राख्या कर। जूनी-बोदी साड़ी हुवती तो थनै काल ई देय देवती अर नूंवी तो दिरीजै कोनी। नूंवी थनै तो कांई मिलै, मिलै कोनी आजकालै सौरै-सांस म्हारी सासूजाई नणदां नै ई, तो पछै थनै कठै सूं मिल जासी?''

आटो लेयनै वा बड़बड़ावती बाखळ सूं बारै चली गी, पण तीसरै दिन वा तो पाछी त्यार। पाछी हाजर हुयगी। आटो घालतां ई पाछी उणरी मांग त्यार। रावण रै तो वा ई भावण, ''बाईसा, पौह महीनै री डांफर डील रै आर-पार निकळै। बूढी सासू रै डील री चामड़ी फाटगी। कोई जूनी-पुराणी साड़ी देवो नीं। भगवान थांरो भलो करसी।''

घरधिराणी कांई करती? उणरै कनै तो वौ ईज जबाब हो। वा नाट रो पड़ूत्तर सुणनै पग पटकती घर सूं बारै निकळगी। इयां करतां-करतां सात-आठ दिन हुयग्या। वा ई दिनूगै सूरज री उगाळी अर वौ ईज घर में आवणो अर आटो मांगणो। आटो लेवणो। जूनी-पुराणी साड़ी मांगणी। नाट खावणो अर मूंडै सूं बुद-बुदाती पाछो जावणो।

रोज-रोज रै मांगण अर नटण सूं मंगती सूं बेसी घरधणी नै सरम आवण लागगी। वौ कैयो, ''अरे सुणै है कांई भगानियै री मां! थारै कनै जे पुराणी साड़ी है तो इणनै देय-दिवायनै नक्की कर। नीं जणै कोई हळकी-पतळी नूंवी साड़ी ई देयनै इण रो मिणमिणाटो मेट। इणनै जठै तलक साड़ी नीं मिलसी, बठै तलक इण रो रोवणो नीं मिटैलो अर नीं थारो लारो ई आ छोडैली। थूं इतरो काम करनै मुगती पायलै। अबै तो दिनूगै-दिनूगै डर लागण लागग्यो कै वा साटणी साड़ी मांगण नै आवण वाळी ई है।''

घरधिराणी ई पूरी दुखी हुयोड़ी ही। धोरै री ढाळण अर दौड़ण रो मन। घरधणी री हरी झंडी मिलतां ई अेक नूंवी साड़ी उणनै देयनै दोनूं धणी-लुगाई गंगा न्हायनै मुगती पाई। इणनै कैवै लगो। जे मिनख किणी चीज-वस्त नै हासल करण री पक्की तेवड़ लेवै अर उणनै लेवण वास्तै आपरी पूरी लगन अर सगती लगाय देवै तो वौ उणनै पायां ई रैवै।

 ISSN : 2320-0995

डेरै रो डोकरो जिको हरजस री रागळी कर-करनै परलोड़ै बास में रोटी-बाटी, आटो-धान मांग्या करतो वौ अबै इण गुवाड़ में आवण लागग्यो। दिन उगतां ई उणरी राग कानां में पड़ै, ''म्हारी अरज सुणो गिरधारी, म्हैं आयो सरण तिहारी।''

इण सूं आगै नीं तो उणनै आवै अर नीं वो गावै। लोगबाग आपरी सगती मुजब उणरी झोळी मांय ठंडी-बासी, आटो-धान घालै। अेक दिन वौ सांमलै घर मांय आयो। सरधा मुजब आखा लेयनै गयो, पण जावती बेळा घर री फाटक खुल्ली छोडग्यो। पछै कांई, सूना फिरै जिका गोधा अर डांगरा घर में बड़ग्या अर दूझतोड़ी गाय नै भेट्यां देय-देय ठांण मांय पटक दी। टोगड़ी अर लवारियै नै ई फंफेड़्या। उणां री जेवड़ी तुड़ाय दी। भैंस रो बांटो खायग्या। खासा नुकसाण कर दियो।

दूजै दिन वौ डोकरो आयो जणै उण घर रा बाबोसा उणनै इतरो ईज कैयो, ''बाबा, धान-आटो मांगण नै आवो वा तो चोखी बात है, पण हाथ उत्तर दियां पछै पाछा जावती वेळा घर री फाटक याद राखनै सावळ बंद कर दिया करो। सावचेती सूं ढक दिया करो।'' पण वौ पाछो कीं ई कैयो कोनी। बोलोबोलो चल्यो गयो।

उण बगत तो वौ चल्यो गयो। दूजै दिन वा ई हरजस री रागळी—म्हारी अरज सुणो गिरधारी, म्हैं आयो सरण तिहारी। करतो-करतो उण घर सूं आगै निकळग्यो। उण घर नै टाळ दियो। उण घर रा लुगाई-मोट्यार उणनै देखै हा। वै सोच्यो कै भजन मांय डूब्योड़ो बाबो आगै निकळग्यो हुवैला। काल आ जासी। पण औ कांई ? इचरज! घोर इचरज! दूजै दिन ई डोकरो घर नै टाळतो थको आगै बधग्यो। इयां करतां-करतां आठ-दस दिन हुयग्या। डोकरो बिना चूक्यां नित नेम सूं आवै। हरजस री रागळी गावै अर वौ घर टाळनै आगै निकळ जावै।

मिनख रो सुभाव घणो इचरज भर्‌यो हुया करै। उणनै कीं कैवै तो कैवै कै म्हनै कैयो क्यूं अर कीं नीं कैवै तो कैवै कै म्हनै कैयो क्यूं नीं ? अठीनै खाडो अर बठीनै खाई। आ दूजी बात है कै किणी ई मिनख नै आपरो घर टाळ्योड़ो बरदास्त नीं हुया करै। घर टाळणियो भलांई मंगतो ई क्यूं नीं हुवै। घरां आयां पछै नाट देवै तो वा हुवै उणरी मरजी। पण अेक घर नै टाळनै आगै जावणो ऊंडै काळजै खटकै। वौ ई खटकणो म्हारै सांमलै घर मांय हुयो। जणै ई वै धणी-लुगाई आगलै दिन उण डोकरै नै घर सूं आगै गयोड़ै नै पाछो बुलायनै पूछ्यो, ''क्यूं बाबोजी, आखै गांव मांय मांगता फिरो हो। म्हैं थांनै कदैई मना कर्‌यो हो कांई ? हुवै जैड़ो हाथ-उत्तर ई देवै हा। पछै थे म्हारो घर कीकर टाळो ? आ बात चोखी कोनी। घर टाळण री बात रो म्यानो मांडनै बतावो।''

जणै डोकरो कैयो, ''देखो, बात आ कोनी। थांरै घरै आटो-धान मांगण नै आवां जणै थांरै घर री फाटक बंद लाधै। आवां जणै पैली फाटक खोलो। पाछी बंद करो। इतरा झमेला अर झंझट म्हारै सूं हुवै कोनी।''

सुणणिया सगळा अेक-दूजै रा मूंडा देखै हा अर अेकै साथै ई बोल्या, ''फाटक नै खोलण अर ढकण में ई इतरो आळस? जणै ई आज आंनै घर-घर मांगण री नौबत आई है।''

इयां करतां-करतां अर चालतां-चालतां उण साटियां रै डेरै नै लगैटगै ढाई-तीन महीनां गांव री इण कांकड़ मांय बीतग्या। इण बिचाळै कदैई गांववाळा डेरै माथै थोड़ै ई गया हा पीळा चावळ लेयनै औ कैवण वास्तै कै थे म्हारै घरां परसाद पावण नै आईजो या मांगण नै आईजो, तो ई उणां रो पेट तो इण गांव अर कांकड़ मांय भरीज्यो ई है। मांगनै खावणो कोई चोखी बात कोनी। औ अेक समाजू अपराध है, पण आ आपां रै गांव री तासीर है कै घर रै बारणै जे कोई भूखो-तिस्सो मिनख आ जावै तो उणनै हुवै जैड़ो हाथ उत्तर ई देवै।

अेक दिन दोपारां री बेळा डेरै री डोकरी गांव में कळजळ-कळजळ करती फिरै ही। उण सूं पूछ्यो तो ठा पड़ी कै डेरै री लुगाई रै टाबर हुवण वाळो है। छोटो-मोटो, अड़ी-अड़चण रो काम तो अै खुद ई निकाळ लेवै, पण अबखी वेळा मांय कीं गड़बड़ अर कुणस गैरी है। इण वास्तै वा गांव में कोई समझदार-जाणकार लुगाई नै सोधै ही। पूछताछ करतां-करतां वा हरिजी बिरामण रै घरां पूगगी। बठै आयां ठा पड़ी कै गांव में अेक छोटो-सो उपचार केंद्र है। बठै अेक नरस बाईजी आया करै, पण आज अदीतवार हुवणै सूं उपचार केंद्र बंद है अर नरस बाईजी ई गांव गयोड़ा है। पाछा सुंवारै यानी सोमवार नै पधारसी। अेक मेघवाळां रै घर री दाई मां ही, पण वा ई लारलै बरस चालती रैयी।

इयांकला माड़ा समाचार सुणनै डोकरी पाछै डेरै कानी टुरगी। गांव में कीं उपचार नीं। स्हैर पांच कोस अळगो। डेरै मांय साधन फकत ऊंठ रो। बीजो कीं साधन करै तो खुंज्या में कोडा चाईजै। बठीनै लाण वा लुगाई कस्टी है अर तड़फड़-तड़फड़ करै। कुरळावै, टिंटोड़ी जियांन। कैया करै है कै पीड़ भुगतणै सूं पीड़ देखणी घणी अबखी अर दौरी हुया करै। दरद तो बापड़ी वा लुगाई भुगतै ही, पण आज आ पीड़ परिवार रै सगळा मिनखां रै मूंडै माथै साफ झळक रैयी ही। जिणां रै जीवणो-मरणो तो हाथ नीं, पण बाकी कीं बच्यो नीं।

थक-हारनै डोकरड़ी पाछी गांव मांय फिरती-फिरती अजवाण अर गुळ री उकाळी री त्यारी मांय हरिजी बिरामण रै घरां पूगगी। हरिजी री जोड़ायत यानी पंडिताणी घर रै बारणै ई ऊभी ही, उण सूं बंतळ हुयी। डोकरी आंख्यां भरती थकी कैयो, ''बाईसा, गुड़-अजवाण देवो नीं। थोड़ी उकाळी बणायनै पास्यूं तो ल्याण बीनणकी रै कीं तो आराम पड़सी अर कीं कारी लागसी। लागै टाबर मां रै पेट मांय आवळ-कावळ है। नीं जणै इतरी जेज नीं लागती।''

 ISSN : 2320-0995

जणै पंडिताणी घर में जायनै हाथूंहाथ उणनै गुड़ अर अजवाण लायनै दी। डोकरी कैयो, ''भगवान थांरो भो-भो भलो करसी। टाबर जे बगतसर सावळ नीं हुयो तो का तो टाबर जासी का पछै उणरी मां अर का दोनूं ई हाथ सूं निकळ सकै। बाईसा, भगवान आज म्हारै मांय कैड़ीक करी है! सूतां-बैठां बिखो नाख दियो।'' कैयनै वा झटपट पगल्यां उठावती डेरै कानी टुरगी। टुरगी कांई लगैटगै भाज्यां बगै ही।

हरिजी बिरामण री बेटी सुखदा, जिकी स्हैर मांय नर्सिंग कोर्स री ट्रेनिंग लेवै ही, अदीतवार री छुट्टी हुवणै सूं गांव आयोड़ी है। बारै टाबर, लुगाई, जापो, गुड़, अजवाण, टाबर अंवळो इत्याद सबद उणरै कानां मांय पड़्या तो वा मांयलै कमरै सूं बारै आयी। आयनै आपरी मां सूं सगळी बातां पूछी-जाणी अर कैयो, ''मां, आज गांव मांय उपचार केंद्र बंद है। अठै री नरस जे गांव गयोड़ी है तो उण पीड़ित अर दुखदायी री मदद आपां नै करणी चाईजै।''

सुखदा री मां पूछ्यो, ''वा कियां बेटी?''

सुखदा पड़ूत्तर दियो, ''मां, नर्सिंग कोर्स रो औ म्हारै आखरी साल है। ट्रेनिंग रा फकत दोय महीनां ई बच्या है। पछै म्हनै अै काम करणा ई है तो आज सूं ई क्यूं नीं? म्हारै माथै भरोसो है या नीं, आ बात आपां उणां सूं पैलां ई पूछ लेस्यां। बठै चालनै देखां कै समस्या है कांई? कितरी छोटी अर मोटी है। देख्यां सूं पतो लाग जासी।''

पंडिताणी इचरज सूं कैयो, ''पण बेटी, आपां तो बिरामण हां अर वै है...।''

सुखदा आपरी मां नै हिवड़ै रै ऊंडै हिंवळास सूं समझाई, ''मां, दोय महीनां पछै म्हारी पढाई पूरी हुयां म्हनै ई कठैई राज री या निजी नौकरी करणी पड़सी कै पछै खुद नै म्हारो नर्सिंग होम खोलणो पड़सी। उण बगत म्हैं कोई मिनख री जात-पांत, धरम-भासा पूछ-पूछनै ईलाज थोड़ै ई करसूं?''

जणै पंडिताणी कैयो, ''बेटी, वा तो आगै री बात है, पण आज सगळा आपां री जात-बिरादरी रा लोग कांई कैयसी?''

''मां, मिनख रो कोई धरम या जात नीं हुया करै। वौ बिरामण, राजपूत, जाट या मेघवाळ कोनी हुया करै। वौ तो हुवै फकत मिनख अर दूजी हुवै उणरी पीड़। पीड़ किणी री जात-पांत पूछनै नीं आवै अर इयांन ई मिनख रो सै सूं मोटो धरम मिनखीचारो ई है। जे औ नीं बच्यो तो न धरम बचैलो, नीं जात अर नीं ई खुद मानखो। बस, थूं म्हनै अेक साबण, अेक साफ-सुथरो कपड़ो अर अेक कतरणी या ब्लैड देय दे अर म्हारै साथै साटियां रै डेरै चाल! दिन आंथण वाळो ई है। अंधारो हुवण लागग्यो है। आपां री थोड़ी-सी जेज उण पीड़ित लुगाई नै भारी नीं पड़ जावै।''

बेटी री बातां में दम हो। साच है। अैड़ी साची बातां सुणनै आज पंडिताणी री आंख्यां खुलगी। झट सूं वा सुखदा रै साथै टुरगी। दोन्यूं झटपट पगल्या उठायनै डेरै पूगगी।

बठै गया तो डैरै रो माहौल पीड़ अर दरद सूं छटपटावै हो, कुरळावै हो। उण लुगाई री चिरळाट्यां दूर तलक सुणीजै ही। मोट्यार अेकै कानी मूंडो लटकायां बैठ्या हा। टाबरिया ई अणमणा हुयोड़ा अळगा ऊभा बोबावै हा। घर री लुगायां उण पीड़िता रै ओळ्यूं-दोळ्यूं बैठी ही।

सुखदा साबण सूं हाथ धोयनै तंबू रै मांय गई। उण पीड़ भुगतती लुगाई नै देखी। टाबर रो माथो कीं अंवळो हो। हुंसियारी सूं ठीक कर्‌यो अर दस मिनट रै मांय ई टाबर जलमग्यो अर उण लुगाई नै कस्ट सूं मुगती मिलगी अर टाबर रो बाळसाद बारै सगळां रै कानां मांय पड़्यो।

बाळसाद हुवै तो अेक नवजाद टाबर रै जलमतै रो रुदन है, पण औ रुदन सुणनै सगळां रै मन री कळी-कळी खिल जावै। यूं तो टाबर रोवै जणै सगळां नै पीड़ हुवै। टाबर रो रोवणो सुणनै दूसरा ई कैवै कै कांई बात है, टाबर नै इतरो रुवाणो क्यूं हो? इणनै चुप करावो, पण औ बाळसाद रो रुदन सुणनै परिवार मांय सगळां रै मूंडै माथै मुळक लाय देवै।

अर आ ई हुयी। आज औ बाळसाद सगळां रै मूंडै माथै हंसी रा भाव लाय दिया, जिण मांय पंडिताणी अर सुखदा ई भेळी है, उण परिवार रै साथै-साथै।

❖❖

ISSN : 2320-0995

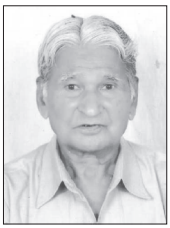

शंकर लाल माहेश्वरी

रुजगार

रामधन अबै बूढो हुयग्यो। कूबड़ तो साव लुकगी ही। लकड़ी ई अबै उणरी चालबा री साथण ही। रिटायर हुयां रै 25 बरसां पछै ई उण रो परिवार बठै रो बठै ईज हो। मोटकी बेटी विधवा हुयां पछै रामधन रै सागै ईज रैवती। छोटोड़ी सुरभि तो आपरै पिवजी रै सागै परदेस गई परी अर गयां पछै तो उण आपरै बाप री कदैई सुध ई नीं ली। बेटो राहुल अेम.अे. फर्स्ट डिविजन सूं पास कर ली अर आपरै कॉलेज मांय सै सूं ई बेसी नंबर लावण सूं बठै सम्मानित ई हुयो। अेक दिन रामधन नै अचाणचक लकवो मारग्यो। खासै ईलाज पछै ई कीं सुधार कोनी हुयो। वौ दिन भर बिछावणां मांय पड़्यो-पड़्यो आवण वाळी अबखायां री चिंता मांय रैवण लागग्यो। स्थिति बिगड़ती ई जा रैयी ही। मां री बूढोड़ी आंख्यां ई उण तांई पाड़ोसी टाबरां नै ट्यूशन पढा सकै ही। अैड़ी हालत मांय पेंसन रा पईसां सूं कोई किण भांत आपरो काम चलावै? अेकलो पड़ग्यो बिचारो रामधन। दिन-रात री चिंता उणनै खावती ही। जो रामधन रोजीना तड़कै चार बजे ई उठनै दंड बैठक लगायनै घूमण निकळ जावतो वौ अबै चार महीनां सूं मांचै मांय पड़्यो रैवण सारू मजबूर हो। तड़कै च्यार बजे उणरै सागै घूमण वाळा ई च्यार महीना बीत्यां पछै ई रामधन री सुध लेवण सारू कोनी आया। औ दुनिया रो कैड़ो दस्तूर है!

बेटो राहुल नित का सुबै पैली रुजगार री तलास मांय घर सूं निकळतो अर सिंझ्या हुवतां ई उदास-हतास हुयनै पड़ जावतो।

ठिकाणो :
पोस्ट-आगूचा
जिला-भीलवाड़ा
राजस्थान 311022
मो. 9413781610

फर्स्ट डिविजन सूं एम.अे. तांई पढबा रै पछै ई वो रोजी-रोटी रो जुगाड़ कोनी कर सक्यो, तो फेर अैड़ी पढाई किण काम री ? इण सूं चोखो तो जीतू लुहार रो छोरो हो। दसवीं पास करतां ई आपरै बाप-दादै रै धंधै मांय लागग्यो अर अबै तो लाखां रो हिसाब-किताब राखै। शिक्षा तो अैड़ी हुवणी चाईजै कै पढतां ई रुजगार मिलै अर सगळा सुखी जीवण जी सकै। राहुल उण दिन रोटी खायनै आपरै घर रै पगोथियां री चौखट पै अणमणो बैठ्यो सोचै हो कै अबै करै तो कांई करै ? इणी टेम रामधन रो बाळपणै रो भायलो जको परदेस मांय रैवतो, उण रा हालचाल पूछण नै आयग्यो। दीनदयाल हो उणरो नांव। घणो ई हंसमुख हो। लाख अबखायां आवै, पण हमेस वौ समान भाव राखै। आपरो संतुलण कदैई कोनी खोवै। रामधन री दसा देखनै वौ बोल्यो, ''दादा! हारियै न हिम्मत, बिसारियै न हरि नाम। थांनै दुखी हुवण री तो कोई ई जरूरत कोनी। कैणात है कै जद मिनख माथै चारूंमेर सूं अबखायां रा डूंगर टूट पड़ै तो अैड़ी औस्था मांय सगळो ऊपर वाळा पै छोड देवणो चाईजै। जिण भांत दुख आवै, उणी भांत मिनख रा जीवण मांय सुख रा भी दिन आवै। राहुल री चिंता मत करो। टेम आवण माथै सौ-कीं ठीक हुय जासी। भाया! चिता तो आपणी ल्हास नै ई जळावै, पण चिंता तो जीवता मिनख नै ई बाळ नाखै। बुढापै नै भड़भड़ाता जीवणै सूं तो चोखो है, उणनै गुणगुणाता जीवो। आस रा नेझा माथै जीवणो सीखो। निरासा वाळा मिनख तो हर ठौड़ अबखायां ई झेलै, पण आस वाळा हर अबखाई मांय मौको देखै, इण वास्तै आसावादी बणनै जीवण जीवो... टेम आयां सगळो-कीं ठीक हुय जासी।''

दीनदयाल नै बेगो ई पाछो परदेस जावणो हो। रामधन सूं विदा हुयनै वौ बारली बैठक मांय राहुल नै कनै बैठायनै गळै मांय बाथां घालनै उणनै औ हौसलो दिरायो, ''बेटा राहुल! ध्यान राखजै, जद सफळता रो अेक दरूजो बंद हुवै जणै दूजो दरूजो खुलै, पण आपां हमेस बंद हुयोड़ा दरूजा साम्हीं ई देखां। जठै हिम्मत खतम हुवै, बठै ई मिनख री हार री सरुआत हुवै। धीजो मती खोईजै। आगै पगल्यां बधा। ध्यान राखजै, हरेक सफळता रो इंजीनियर मिनख खुद ईज हुवै। वौ आपरी अंतर्आतमा री ईंट अर जीवण रो सीमेंट उणी ठौड़ लगावै जठै चावै तो सफळता रो मोटो मजबूत मुकाम खड़ो कर सकै है। मोतीड़ा तो हमेस समंदर मांय गोतिया लगाणै पै ही मिलै, कनारां पै बैठ्यां सूं कोनी मिलै। सफळता सारू नूंवा गेला चुणो। म्हैं थनै सफळता रो अेक ईज गुरुमंतर देयनै जा रैयो हूं, वौ औ है कै सब सूं पैली आपरो लक्ष्य ठावो करो अर पछै उण मांय इण तरै जुट जाओ, जठै तांई कै थांनै थांरी मंजल नीं मिलै। हमेस ध्यान राखजै, जीवण-जुध मांय बलवान अर जोरां सूं भाजण वाळो ई कोनी जीतै, बल्कै हरेक जुध मांय वौ ईज जीतै है जको आ सोचै कै वौ जीत सकै। भरोसो हुवणो चाईजै आपरी काबलियत पै। हिम्मत रै सागै ई काबलियत जरूर साथै देवै। कागद आपरी किस्मत सूं उडै, पण पतंग आपरी काबलियत सूं। अगाड़ी बधता चालो, कांटां रै गेलै री चिंता मत करो। थारी मैणत अर मजबूत इरादा थांरै गेलै रा कांटा नै जरूर फुलड़ा बणा देसी।''

दीनदयाल री सीख रो जबरदस्त असर हुयो राहुल माथै। उण मांय नूंवी ऊरजा रो संचार हुयो। नूंवी उमंग अर नूंवा जोस रै सागै चाल पड़्यो आपरी मंजल माथै। उण रा लक्ष्य मांय कसावट आयगी। अबै वौ जाणग्यो कै बाट जोवा वाळा नै तो इतरो ई नसीब हुवै जितरो कोसिस करबा वाळा छोडै। राहुल अबै हौसला री उडाण भरै हो। अजै राहुल तड़कै बेगो ई न्हा-धोयनै त्यार हुयग्यो। माइतां रै धोक देयनै काम री तलास मांय जयपुर जावण री इजाजत लेय ली। आवण वाळी संभावना री लिस्ट बणायनै जयपुर पूगग्यो। दोपारां री रेल सूं टेसण रै बारै ई ठेलावाळा, रिक्सावाळा नै देखनै मन मांय आयो कै म्हैं ई औ काम क्यूं कोनी कर लूं? इण सूं जातरियां सूं आवती-जावती बेळा बातचीत हुयसी अर मिनखां सूं परिचै बधसी। फेरूं तो म्हैं किणी रै साथ कामकाज री बात ई बधा सकूं। कदै न कदैई, किणी न किणी सूं तो काम रो जुगाड़ बैठ ई जासी।

इणी आळ-जंजाळ मांय वौ चौरायो पार करै ई हो कै उणनै अेक हरयो बाग निगै आयो। वौ उण बाग मांय मिंदर कनै पड़ी सूनी बेंच पै बैठग्यो। कनै खड़्या ठेलावाळां सूं भूख सांत करबा सारू अेक रै पछै अेक समोसा ले लिया। पुराणा अखबार कागद रा टुकड़ा पै पड़्योड़ा समोसा रा चटखारा लेबा रै पछै जियां ई उण कागद नै कचरादान मांय फेंकण ईज वाळो हो कै उणरी निजर उण अखबार रा कागद पर लिख्योड़ा विग्यापन माथै पड़ी। उण मांय लिख्योड़ो हो—मिलिये, वर चाहिये तो वर से और वधू चाहिए तो वधू से। उणरी आंख्यां अठै ईज ढबगी। पूरै रो पूरो ब्यौरो अेक सांस मांय ईज बांच लियो। पछै सोच्यो, क्यूं नीं इण भांत रा विग्यापन नै आधार बणायनै रुजगार सरू करयो जावै। अबै कांई हो, आसा अमर हुयी। नूंवी उमंग भरगी।

बठै कनै रा जळमिंदर मांय जायनै आपरी तिरस बुझाई अर आज रा अखबार री तलास मांय आगै बधग्यो। नामेक अगाड़ी शिव मिंदर रा पगोथियां पै अेक छोरो जोर-जोर सूं बोलै हो—वर चाईजै तो आज रो अखबार बांचो, आपनै वधू भी मिलसी। भणिया-लिखिया, नौकरी-पईसा वाळा किणी भी जात रा, समाज रा हुवो, मिलसी। हमउमर रा, स्वस्थ अर जोड़ीदार रिस्ता। राहुल नै आपरो गेलो साफ हुवतो दीखै हो। वौ अखबार मोलायो अर वर-वधू रा विग्यापन नै काटनै आपरी जेब मांय घाल लियो।

दूजै दिन नौ बजी रो टेम हो। नास्तो-पाणी करनै आपरा भविस रो हिसाब-किताब लगावण लाग्यो। उणी टेम अखबार बेचण वाळो छोरो आयो अर म्हैं उण सूं आज रो अखबार खरीद्यो। वर-वधू रो पानो पलट्यो। विग्यापन मांय सूं जोड़ीदार री तलास करी। कागद लिखणो सरू करयो। तीन-चार दिनां पछै ई उणरै फोन री घंटी सुणीजी। भायाजी! थांरो कागद मिल्यो। काम करवा रो थांरो प्रस्ताव चोखो लाग्यो। म्हे त्यार हां। काम बेगो सो करवा दीज्यो। आपरो मैणताणो हाथूंहाथ मिल जासी। इण भांत ब्यांव रा विग्यापन रो रुजगार बधतो गयो। दिन दूणी, रात चौगुणी प्रगति हुई तो वो फूल्यो कोनी समा रैयो हो।

उण घणी दाण विधवावां नै सधवा बणा दी अर तलाकसुदा नै सादीसुदा बणायनै पुण्य कमायो। औ काम उणरै सारू वरदान बणग्यो। पिता रामधन रो जयपुर रा मानीता डाक्टर सूं ईलाज करवायो। बाप तन सूं अर बेटो मन सूं स्वस्थ हुयनै परिवार सागै आणंद सूं जीवण जीणै लाग्या।

बाग रा उण जळमिंदर मांय अेक अपंग चौबीस-पचीस बरस री विकलांग विधवा टाबरी रोजीना पाणी पावती अर इण सूं आपरो पेट पाळती। वा टाबरी तड़का बेगी तो पईसांवाळां रै घरां झाड़ू-बुहारी करती तो आधो-अधूरो पेट ई भरीजतो। उण रो धणी उत्तराखंड री बाढ मांय राम नै प्यारो हुयग्यो हो। जद प्याऊ माथै सूं छुटकारो मिलतो तो दिन भर रा मिल्योड़ा पईसां सूं पेट भर रोटी रो इंतजाम कर लेवती। कोई तिस्यो दयाभाव सूं तो कोई मनचल्यो आपरी मौजू सूं ई पाणी रा पईसा घालनै बुओ जावतो। सिंझ्या री बगत पस्त हुयोड़ै मजूर दांई आपरै घरै जावती अर दूजै दिन री बाट जोहती। उण रो नांव सुधा हो। अेक दिन अेकांत मांय राहुल उण री रामकहाणी सुणी। उण रो हियो घणो पसीज्यो अर वौ उणनै आपरी जीवणसंगिनी बणण रो प्रस्ताव राख्यो तो वा घणी राजी हुई। माइतां री साखी मांय धूमधाम सूं ब्यांव हुयग्यो। रुजगार रा इण कारोबार मांय दोनूं ई जणा लागग्या। सुधा कंप्यूटर अर इंटरनेट रो ग्यान प्राप्त कर लियो अर इण मांय सैयोग सरू कर दियो। दीनदयाल परदेस मांय रैवता थकां राहुल अर रामधन री खोज खबर लेवता रैवता।

राहुल रा बधता कारोबार सूं वौ घणो राजी हुयो। रामधन ई स्वस्थ हुयनै इण कारोबार मांय जुटग्यो। वौ ई राहुल रो सहारो बणग्यो। घणा ई मिनखां री गिरस्थी चाल पड़ी। पिछाण बधी तो धंधो बधग्यो। आज रै ईज दिन साल भर पैली काम सरू करयो हो राहुल। अबै तो आपणो घर ई बसा लियो। मां बापू ई सागै रैवण लागग्या। आज राहुल नै समझ मांय आयग्यो कै दो आखर रो 'लक' ढाई आखर रा 'भाग्य', तीन आखर रो 'नसीब' अर साढे तीन आखर री 'किस्मत' आद सगळा आखर चार आखर री 'मेहनत' सूं साव छोटा है।

❖❖

 ISSN : 2320-0995

नदीम अहमद नदीम

मिरतु-पास

कोरोना काळ मांय बाबू उणनै गौर सूं देख्यो अर बोल्यो, ''थे जिद ना करो अर घरै ईज रैवो, पास फकत जरूरी सेवा मांय लाग्योड़ा लोगां नै ईज जारी करीज रैया है।'' वौ तीन-च्यार बार लताड़ खायनै बठै सूं चल्यो गयो, पण पछै जोड़-तोड़ करनै समाजसेवी रो विशिष्ट पास बणवायनै चिड़ावण वास्तै उण बाबू रै साम्हीं आयो अर वौ पास लैरायो। बाबू फकत इत्तो ई बोल्यो, ''हां, औ मिरतु रो ई पास है, आ ना भूल्या।''

❖❖

स्राप

अणमणी चाल सूं चालतो कुत्तो पाटै रै नीचै बैठी कुत्ती रै कनै आयनै बैठग्यो।

''कांई हुयो, अणमणी कियां बैठी है?'' कुत्ती पूछ्यो।

कुत्तो बोल्यो, ''म्हैं तो आज तांई आ समझ राखी ही कै आवारा रुळणै रो स्राप फकत आपणी प्रजाति नै ई मिल्योड़ो है, पण आज औ जाण लियो कै मिनख ई आपां सूं गयोबीत्यो है। मिनखजात री रक्षा सारू ई घर मांय नीं टिक सकै।''

कुत्ती रो ई मन कर्‌यो कै वा जोर-जोर सूं भुस नै कुत्तै री बात री हामळ भरै, पण बगत री नजाकत देखनै बा चुप धार ली।

❖❖

ठिकाणो :
जैनब कॉटेज
बडी कर्बला मार्ग, चौखूंटी
बीकानेर 334001
मो. 9461911786

मीटिंग

जिनावर मीटिंग कर रैया हा। मीटिंग मांय वै भगवान सूं अरज ई करै हा कै हे भगवान! इण कोरोना महामारी सूं मिनखजात नै निजात मिलै। पण जवान जानवर रीसां बळै हा कै मिनखां सारू क्यूं अरज करीज रैयी है, आ मिनखाजात तो है ई इणी लायक। पण बूढिया जिनावर वांनै समझाया कै थे ई कर दी नीं मिनखां वाळी बात। आपां तो जिनावर हां, आपां नै आपणी मरजाद नीं बिसरणी चाईजै।

❖❖

मिनखाचारो

च्यारूं दिसावां मांय आवाजां गूंज रैयी ही— म्हैं हिंदू हूं, म्हैं मुसळमान हूं, म्हैं फलाणो, म्हैं ढींकड़ो हूं। अचाणचक अेक आवाज हवा री सौरम रै सागै आई, ''म्हैं डाक्टर हूं अर म्हारो मजहब है मिनखाचारो।

❖❖

हुकम

लॉकडाउन रै टेम मांय पुलिस रो अेक जवान गस्त करतो थको अेक चौकी माथै बैठग्यो। घर रो बारणो खुल्यो। डोकरी जवान सूं बोली, ''ले बेटा, चाय पी ले।''

जवान अचकचायो अर बोल्यो, ''मा'सा! कप यूज अेंड थ्रो वाळो देवो, म्हैं कप पाछो कोनी दे सकूंला।''

डोकरी बोली, ''कप में ईज चाय पी ले बेटा, थांरै माथै अैड़ा लाखूं कप निछरावळ करूं तो ई कम है।''

जवान री आंख्यां भरीजगी अर उण डोकरी रै उणियारै मांय उणनै आपरी मां निगै आयी।

❖❖

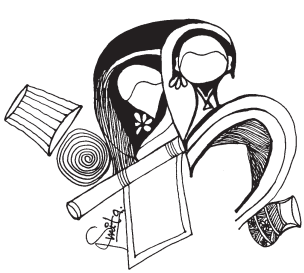

ISSN : 2320-0995

राजेश अरोड़ा

वौ ईज हुयग्यो

बदळी हुयनै आया अेक जिला शिक्षा अधिकारी आज नूंवै ऑफिस मांय आपरी ड्यूटी ज्वाइन कीधी। ऑफिस मांय सगळा कर्मचारियां सूं परिचै रै पछै वै आपरै चैंबर मांय बैठग्या।

बाबूलाल ग्रुप डी आपरी ड्यूटी मुजब सगळा कर्मचारियां नै पाणी पावतो थको साब री टेबल माथै ई पाणी रो गिलास न्हाखग्यो। लंच रो टेम हुयो। साब उठ नै चल्या गया। बाबूलाल फाईलां आद लेवण नै साब रै चैंबर मांय गयो। देख्यो, टेबल माथै पाणी रो गिलास बियां रो बियां ई पड़्यो है। आज पैली बार उणनै खुद रै सूद्र हुवण रो दुख मैसूस हुयो। उण सोच्यो कै अबै म्हैं ई साब नै समै रै साथै चालणो सिखासूं।

साब लंच सूं पाछा आया तो बाबूलाल साब रै चैंबर मांय गयो अर बोल्यो, ''साबजी! म्हैं अेक सूद्र हूं अर आप बिरामण, इण खातर ई आप म्हारै हाथां रो पाणी कोनी पीयो। इण रो मतलब है आप मिनख-मिनख मांय भेद मानो। जद कै मिनख-मिनख मांय अभेद है। कारण कै हरेक मिनख रा हाड-मांस अेक सिरसा हुवै। हरेक मिनख रो अेक सिरसो मज्ज-जाळ हुवै। हरेक मिनख री नाड़्यां मांय अेक सिरसो लाल रंग रो रगत बैवै। हरेक मिनख अेक सिरसी खाल सूं मंढ्योड़ो हुवै। हरेक मिनख रै भीतर अेक सिरसी आत्मा रो रैवास हुवै।'' कैयनै बाबूलाल फेरूं बोल्यो, ''साब जी! जे आपरै कनै भेद रो कोई कारण हुवै, तो म्हनै ई बतावो जणै म्हारै मन रो बैम दूर हुवै।'' साब मून रैया। आगलै दिन साब ड्यूटी माथै आया। कुरसी माथै बैठतां ई बोल्या, ''बाबूलाल! ल्या पाणी झला अर साथै दो चाय लेयनै आव। आज आपां सागै पीस्यां।'' सुणनै बाबूलाल री खुसी रो कोई ठिकाणो नीं रैयो, क्यूंकै उण जिको सोच्यो, वौ ईज हुयग्यो हो।

❖❖

ठिकाणो :
भारतीय डाक विभाग
गजसिंहपुर 335024
जिला-श्रीगंगानगर(राज.)
मो. 9783337497

पूर्ण शर्मा 'पूरण'

दूजो चेहरो

लुकोवा-लुकोवी सूं कांई हुवै, आपनै बताय ई देवूं कै म्हारै बापू रा दो चेहरा हा। इण बात रो म्हनै अबै ठाह लाग्यो हुवै, आ बात कोनी। ठाह तो म्हनै उण बगत ई हो जद म्हैं पांच-छह साल रो हो स्यात। पण उण बगत पक्काई सूं कैय कोनी सकै हो।

लांबी-तड़ींग देही रा धणी बापू धोती-कुड़तो पैरयां पछै कीं और ई लांबा लागता। धोळी धोती अर धोळै कुड़तै मांय कड़च्छ बापू रो गोरो रंग जाणै चिलकारा मारतो। लांबी डांडी वाळो तीखो नाक अर कीं-कीं उठ्योड़ी-सी ठोडी। लिलाड़ माथै रा बाल जाणै कदैई हुया ई कोनी अर लारै टोचरी कानी सरकती गंज स्यात हरमेस इयां ई हुंवती। पतळा अर राता सुरख होठां माथै री मुळक सदीव थिर रैवती। वै चिलम पीवता। रोजीना दिनूगै चाय पीयां पछै वै बारै बैठक रै आळै मांय आडी धरयोड़ी चिलम भरता अर बारै चूंतरी माथै बैठनै घणी ताळ तांई सुट्टा मारता। दो-अेक सुट्टां पछै धूंवै री लाट पाटती तो चौफेर धूंवो ई धूंवो हुय जावतो। इयां लागतो जाणै धूंवो स्यात आभै मांय जा पूग्यो हुवै। बादळां मांय। म्हनै बापू रो इयां करणो घणो आछो लागतो। म्हारो जी करतो कै म्हैं ई इयां धूंवो काढूं अर बादळां तांई पूगा देवूं। अछंट म्हनै लागतो, धूंवो बादळां तांई कांई पूगतो, स्यात बादळ ई हेठै उतर आवता। चूंतरी माथै। आखी चूंतरी माथै इब बादळ हुवता अर इत्ता सारा बादळां बिचाळै बापू ई जाणै अेक ठाडो सारो बादळ हुय जावता। धूंवै रो बादळ। पण औ कांई ? कीं ताळ टिप्यां

ठिकाणो :
प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र
रामगढ, तहसील -नोहर
जिला-हनुमानगढ़ (राज.)
मो. 9828763953

 ISSN : 2320-0995

पछै धूंवो–धूंवो बादळ हुवतो बापू रो चेहरो अचाणचक पाणीलो हुय जावतो। धूंवो अबै बापू रै फेफड़ां मांय मावतो ई कोनी अर सेवट खल्लूं–खल्लूं करता बापू अळूझ–अळूझ पड़ता। आंख्यां बारै आवण नै हुय जावती, जाणै पाणीलो बादळ अबै ई पाटसी। इत्तो सौ–कीं हुय जावतो, पण पसेवै सूं हळाडोब बापू चिलम कोनी छोडता। वै उतावळी–उतावळी सांस भरता जावता अर और जोर सूं खांसबो करता। घणी ताळ तांई री रमाण पछै अछंट अेक गिटक–सी आवती अर वै चूंतरी साम्हीं थूक देंवता। ओरी–सी ढळ जावती जाणै। भीतर जको इत्ती ताळ सूं मचमची खावतो हुवतो वो अबै चूंतरी साम्हीं दूर रेत मांय पड़्यो थिर हुवतो। म्हैं कदै रेत मांय थिर पड़ी उण खंखार री गिटक नै देखतो अर कदै बापू रै सांयत चेहरै कानी। झंखेड़ै पछै सांयत हुयोड़ै बापू रै चेहरै माथै थिर वांरी दोनूं आंख्यां कीं–कीं मीचजती–सी हुवती इब। जाणै किणी जोगी भाव रै बस हुयोड़ो बारै रो सौ–कीं अबार भीतर कानी लुळतो हुवै।

थोड़ी ताळ पछै बापू इण जोगी–भाव सूं बारै नीसर आवता अर म्हारी आंगळी थामनै बारै खेत कानी चाल पड़ता।

बापू गाभा सीड़ण रो काम करता। पण तो ई रोजीना दिनूगै पैलां अेक गेड़ो खेत कानी लाजमी मारता। आंधी–मेह ई कोनी चूकता। वां दिनां वै म्हनै आपरै साथै लेय जावण लाग्या हा। अलबत्त कदै–कदास पैलां री दांई म्हारै बडोड़ै भीयै नै ई लेय लेवता। म्हैं बापू री आंगळी पकड़्यां चालतो, पण भीयो बापू री आंगळी कोनी पकड़तो। वौ बापू रै आगै–आगै चालण खातर लगैटगै भाजतो–सो चालतो। भाजतो–सो ई म्हैं चालतो। बापू री लांबी डग म्हारा छोटा–छोटा पांवडा रै कद हाथ आवै ही?

वां दिनां म्हे साळ मांय सोवता। ठारी मांय कीं निवाच–सो रैवतो। म्हनै पछै ठाह लाग्यो कै औ निवाच किण रो हो। निवाच साळ रो नीं, साळ मांयला गुड़ रा कट्टां रो हो। तद म्हैं दूजी क्लास मांय हुयो ई हो अर भीयो चौथी मांय। भीयै रो जिकर म्हैं घड़ी–घड़ी इण खातर करूं कै म्हारी जूंट हुवती। म्हे भाई कम, बेली बेसी हा। साथै ई रैवता अर साथै ई सोवता।

बापू आपरै गाभा सीड़णै अर खेती रै काम सागै–सागै थोड़ो–बौत सौदो–सुलफो ई राखता। कदै कळी–कस्सी लेय आवता, कदै मुट्ठा। गुड़ तो हरेक साल ई बपरावता। सरदी आवतां–आवतां गुड़ पाक जावतो तो बापू जित्तो माल लेवणो हुवतो, लेय लेवता। बापू अेक दिन आदराम गाडावाळै नै आपरै सागै भादरा लेय जावता अर माल खरीद नै उणनै संभळाय आवता। आदराम ताऊ पछै रा पांच–सात दिनां मांय सगळो माल ढोह लेवतो। घरां गुड़ सारू कोई निरवाळी कोठड़ी कोनी बण्योड़ी ही। बारली बैठक नै टाळ आंगणै मांय जित्ता नग हा, वां सगळां मांय गुड़ ई गुड़ हुय जावतो। कोई बारै रो माणस घरां आवतो तो चकड़ीचक हुय जावतो। उणरै कीं पल्लै कोनी पड़ती। आखै घर मांय गुड़ री सौरम ई सौरम हुवती।

गुड़ री आ सौरम म्हारै नासां मांय रम्योड़ी ही। आज सोचूं तो जाणै कियां-सो लागै कै म्हे सगळा वां दिनां गुड़ माथै सोवता हा। मांचां रै पागां हेठै खोरिया मेल-मेलनै ऊंचा कर लेवता अर तळै धरीजता गुड़ रा कट्टा। साळ मांय ई औ ई हाल हो। म्हे साळ मांय ई पढता अर साळ मांय ई सोवता। आधी-आधी रात तांई तो कोनी, पण केई ताळ तांई लाजमी पढता। पढाई रै मांय-बिचाळै म्हे दोनूं गुड़ री कांकरी खायां जावता। दो-अेक घंटां पछै काम-धंधो सलटायनै मां आय जावती। म्हे दोनूं जाणै मां नै उडीकता ई हुवता। मां आवतां ई कहाणी टोर लेवती। मां कनै छोटी-छोटी कहाणियां हुवती। अलेखूं। पण हुवती भांत-भांत री। कदै राजा अर राणी री तो कदै जंगळ रै जिनावरां री। कदै-कदै तो किणी ओटपै जीव री कहाणी हुवती जकी सुण्यां पछै म्हे दोनूं भाई उण रात मां रै बाथ भरनै ई सोवता। सोचता सुपनै मांय कठैई वौ ओटपो जिनावर नीं आ जावै।

मां रोज नूंवी कहाणी सुणावती। म्हैं सोचतो, कठै सूं आवै मां कनै इत्ती सारी कहाणियां! पण इण सवाल रो पड़ूत्तर उण बगत ई नीं हो अर आज ई कोनी म्हारै कनै।

कहाणियां रो औ ईज बगत हो जद बापू कदै-कदास भादरा गयोड़ा हुवता तो म्हारै खातर कीं न कीं लाजमी लेयनै आवता। उन्हाळै मांय तरबूज-खरबूजा तो सियाळै मांय पापड़ी अर पतीसी। वां दिनां म्हनै लागतो, म्हारै बापू जिस्या किणी रा बापू कोनी। वां दिनां म्हारी सोझी इत्ती ठाडी कोनी हुई ही, इण खातर लागतो हुयसी, पण बात इयां नीं है स्यात। म्हनै तो आज ई इयां लागै कै म्हारै बापू बरगा किणी और रा बापू है ई कोनी। तो कांई इण बात रो सनमन सोझी सूं कोनी?

खैर, घणी बातां मांय कांई है, बापू म्हारो लाड राखता। हां, आ अलग बात है कै इण लाड अर हेत साथै वै सावचेत ई हा, ''रोज सिंझ्या रोटी जीम्यां का गुड़ खायां पछै चोखी तरियां कुरळो करणो है अर दिनूगै पैलां कोयलै रो मंजण।'' म्हारै चिन्ना-चिन्ना हाथां सूं कदैई कोई खोवा-खिंडायी हुय जावतो तो रोळा ई हुवता।

औ बापू रो पैलो चेहरो हो। इण मांय म्हारै सैंग सारू लाड हो, हेत हो, पण सागै-सागै ई सावचेती ही। इण सावचेती मांय रोळा हा, पण रीस कोनी ही। कुम्हार रै घड़ियै बणाणै दांई वांरो अेक हाथ घड़ियै रै मांय अर दूजो उणरै ऊपरै थपकी देंवतो हुवतो। बापू रो औ चेहरो जाणै थिर हो। जठै जाबक ई किणी फेरबदळ री गुंजास कोनी ही।

पण बापू रो दूजो चैरो थिर कोनी हो। घणा ई दिनां तांई तो म्हनै ठाह ई कोनी लाग्यो कै बापू रो कोई दूजो चेहरो ई है। वांरै सदीव मुळकतै थिर चेहरै मांय किणी दूजै चेहरै री गुंजास ई हुय सकै, स्यात म्हारी छोटी-सी सोझी आ नीं समझ सकै ही।

वां दिनां म्हारै घरां लालटेण री जिग्यां लैंप हुवतो। म्हारै सागै पढणिया दूजा सागड़ती इचरज करता अर दूजा सागड़तियां नै बडम सूं बतावता, ''आं रै लैंप है रैय...।'' अेक

 ISSN : 2320-0995

दिन पढती बरियां म्हारै दोनुवां मांय चटापटी हुयगी। इसी चटापटी सूं म्हारो तो खैर कांई बिगड़ै हो, पण लैंप रो गाळियो आयग्यो। म्हारी लात लागी अर काच री खेळी-खेळी हुयगी। म्हारी पिंडी मांय काच बैठग्यो। लोही सूं पजामो तर हुयग्यो। अबै तेरा बधै का मेरा! दोनुवां रा काच-काच चेहरा कागज बरगा हुयग्या। बापू नै ठाह लागसी तो?

''बाड़ दी नीं सात री माता?'' बापू नुकसाण हुयां पछै नूंवी ल्याईजण वाळी चीज रो मोल सागै जोड़नै बात करता। कीं जोर सूं बोलता जाणै भीतर कीं खिंडग्यो हुवै, उणनै उतावळी-उतावळी जचावता हुवै।

बापू रो औ पैलो चेहरो म्हारै छानो कोनी हो। आखी रात भूंडा-भूंडा सपना आवता रैया। किणी-किणी सपनै मांय तो बापू रो रोळा करणियो थिर चेहरो रातो-बंब हुयनै सिलगण लाग्यो। म्हैं भैय सूं धूजण लाग्यो। किणी दूजै सपनै मांय बापू आपरी करड़ी मीट सूं देखता-देखता अचाणचक म्हनै जंतरावण ढूकग्या। छेकड़ अेक सुपनै मांय तो वां म्हारी वा ई टांग पकड़नै खेंची जकी रै काच गड्योड़ो हो अर म्हनै सांमलै जोहड़ै मांय बगाय दियो। पाणी मांय जोर सूं पड़्यां म्हारी नाक अर आंख्यां मांय पाणी बड़ग्यो अर म्हैं डूबतो-तिरतो गरळायो।

चिरळी साथै ई जाग आयगी। पछै बच्योड़ी रात पसवाड़ां मांय ई काटी।

उण रात मां इण बात नै लुकोय ली। बापू सूं कीं कोनी कैयो। बापू नै दूजै दिन ठाह लाग्यो। मां आपरा सधेड़ा टप्पां मांय सौ-कीं बतावती गई। बापू म्हारी पिंडी सूं पाटी खोलनै देखी अर केई ताळ तांई मां री बात सुणता रैया। जाणै कीं सोचता हुवै का पछै रोळा करण रो सुंवांज करता हुवै। म्हे दोनूं सारै ई ऊभा हा। मां सगळी बात बतायां पछै अलेह-सी पीढै माथै बैठगी। इण उडीक मांय कै रोळा हुयसी। पण बापू रोळा कोनी करग्या। म्हारै कीं समझ मांय कोनी आयो। बापू रोळा क्यूं कोनी करग्या। भीतर जाणै कीं गिरगिराट-सो हुयग्यो। अेकर जी मांय आयी कै बापू नै पूछ लेवूं कै थे रोळा क्यूं कोनी करग्या।

औ बापू रो दूजो चेहरो हो।

उण बगत तो नीं, पण पछै रै सालां मांय जद स्यात म्हारी सोझी रो भाखलो कीं और पसरग्यो तो ठाह लाग्यो कै बापू नै जकी चीज आछी नीं लागती का पछै जकी बात बापू रो काळजो चींथती उण माथै बापू अबोला रैय जावता।

उण दिन लैंप रो काच फूट्यां सूं नीं, बापू म्हारी पिंडी मांय काच लाग्यां सूं अबोला रैया हा।

❖❖

छगनलाल व्यास

नूंवो बरस, नूंवी कामना

अचाणचक घरवाळी अेक रजाई नै खेंचती बोली, ''हैप्पी न्यू ईयर!'' म्हैं दूजोड़ी रजाई नै काठी भींचतां कड़ाकै री ठंड रो पूरो जाब्तो करतो बोल्यो, ''इण हाडतोड़ ठारी मांय थनै ई जोर री मजाकां सूझै! अठै दोय-दोय रजाइयां ओढ्यां ई धूजणी नीं रुकै। सरदी खुद रो रौब ओछो करण रो नांव लेवै नीं अर थूं कैवै कै उठो! नूंवो बरस लागग्यो। हाल कांई सोवो?''

म्हैं फेरूं अचूंभै सूं सोच्यो, इण हाड-कांप शीत मांय औ नूंवो बरस कठै आय टपक्यो। आंख्यां मसळतां रजाई मांय अंग्रेजी रो आठो बण्यां फेरूं दिमाग दौड़ायो, आछो मौसम हुयां नूंवै बरस रो आदर-सत्कार ई निराळो। दांत किट-किट करतां, हैप्पी न्यू ईयर बोलतां जुबान नै जोर पड़ै तो पड़ै, पण औ नूंवो बरस मान चायै मत मान, म्हैं थारो मैमान री भांत आय पूग्यो।

अेक साल इयां बीतग्यो जाणै गधै माथै सूं सींग। अेक कांई, अठै तो पूरा पैंसठ इयां निकळग्या जाणै कालै री बात। कदैई सूखा अर कदैई गीला। बाल ई बिचारा धोळा हुवता-हुवता मारग पकड़ण लाग्या। आखर कितरा नूंवा बरस देखता!

औ भारत देस! अठै नित नूंवो दिन ऊगै। नित नूंवो बरस आवै। इण तरियां बारै महीनां मांय तेरह-चवदै तो नूंवा बरस आवै तो कठैई दांतां आंगळी देवण री जरूरत नीं, क्यूंकै कदैई कोई कैवै 'नव वर्ष की शुभकामनाएँ'। कदैई कोई मुळकतो बोलै, 'मंगलमय हो नया वर्ष', तो कदैई 'नया साल मुबारक' रा बोल कानां पड़तां-पड़तां मत्तै ई ठाह पड़ै कै बरस बदळग्यो।

ठिकाणो :
गांव-खण्डप
वाया-मोकळसर,
जिला-बाड़मेर (राज.)
मो. 9462083220

 ISSN : 2320-0995

म्हारा टाबर जुलाई सूं नूंवो बरस जाणता। इण रो कारण उणां नै जुलाई मांय नूंवी क्लास मिलती। नूंवी पोथ्यां, नूंवी पोसाक साथै नूंवो बस्तो, नसीब हुयां वै नूंवो बरस जुलाई मानता रैया। स्टेशनरी री दुकान माथै टाबरां री भीड़ नै देखतां नूंवै साल रो पतियारो हुय जावतो।

सरकार बदळी। आज पोता-पोती जुलाई री ठौड़ मई नै नूंवो बरस कैवै तो कानां नै विस्वास नीं हुवै, क्यूंकै सावण रै आंधै नै हरयो ई हरयो दीखै। म्हैं खुद जुलाई नै नव वर्ष मानतो लगैटगै सगळां री जलम तारीख जुलाई ई टीपतो, जाणै टाबरां रै जलम सारू जुलाई ओपतो महीनो। ज्यूं पसु-पंखेरू रै जलम रा महीना तैय हुवै त्यूं ई पढणियां सारू जुलाई माह। हाथ में चूड़ी सारू काच री कठै जरूरत! घणकरा विद्यार्थियां रो जलमदिन जुलाई महीनै ई आवै। अैड़ै विचार वाळा नूंवो बरस जुलाई कैवै तो पेट सूं पाणी क्यूं डिगावणो? आखिर जिणरी खावै बाजरी, उणरी उठावै हाजरी। जुगां जूनी रीत। आ रीत बेटा-पोतां चाली।

आज तीजी पीढी बदळ दियो बरस। मई इणां सारू नूंवो बरस। न्यू क्लास। न्यू पाठ्यक्रम। न्यू भासा अंग्रेजी रो बोलबालो। नूंवी स्कूल-कॉलेज। प्रवेस प्रक्रिया मई। यानी नूंवो साल मई मानै तो मानै कुण अर क्यूं पेट दुखावै? स्कूल रै लारै सूं जावण वाळा नीं जुलाई नै अर नीं मई नै नूंवो साल मानै। उणां री तीन लोक री मथुरा न्यारी। उणां नै कैवो, ''आज नूंवो बरस लागग्यो। अबै उगणीस री जग्यां बीस लिखीजैला'' तो वै मूंडो बिगाड़ हांसैला, औ सोच कै भण्या-गुण्या खुद नै नीं जाणै कांई समझनै कैवै, बीस लिखीजैला। भलांई अै लिखो म्हारै तो सावण हरयो निकळै तो मानूं बीस। पूरै महीनै झड़ी लागै जद जाणूं बीसो-बीस। घर में धान आयां नूंवो बरस, नूंवी योजना, नूंवो जास मत्तै ई हाथ-हाथ कुदावै।

वाह म्हारा भारत! अठै आयो उणी नै आवकारो। घर रा भलांई घट्टी चाटो, पावणा रै आटो त्यार। वै आवता रैया, पग पसारता रैया। अलेखूं राजावां राज करयो। जिकै जसधारी राजा हुया वै खुद रो नांव अजर-अमर करण सारू नूंवा बरस स्थापित कर लीना। धीरै-धीरै आ रीत बणगी। वो जाणै म्हैं टणको अर वौ जाणै म्हैं। इण दीठ सूं विक्रमादित्य विक्रम संवत् चलायो जिको चैत सूं फागण तांई रो। इणी कारणै आज बीस रा विरोधी कैवै, ''आपां नै ईस्वी सन् सूं कांई लेणो-देणो! औ तो ईसा चलायो। धरम रो ध्यान राखतां आपां तो चैत्र नवरात्रा सूं नूंवो बरस मनावांला।'' धरम रै नांव माथै कठै ई बवाल नीं मचै, इणी कारण बात नै विराम देवण सूं पैली अलेखूं कैवैला, ''बाबा आदम रै जमानै रा जठै तांई जीवैला, भारत नै ऊंचो नीं आवण देवैला! वौ ई कोई वर्ष है, जिकण मांय महीनो-महीनो बध जावै अर जचै जिकी तिथ नै तोड़-मरोड़नै फेंकै अर जचै उणनै दो-दो कर लेवै। इण ऊपरां महीना रा नांव याद करतां सात भव री नीं तो नानी तो जरूर याद आवै ई।

दूजी कानी सूं आवाज आवै, ''क्यूं देस री संस्कृति रो धूड़ो उडावो! आ पाश्चात्य संस्कृति नीं प्रेम उजावै, नीं अपनत्व। पसु री भांत फकत स्वार्थी। फकत दिखावो। आप आपरी ढपली, आप आपरो राग।''

इणी बिचाळै शाके, हिजरी, महावीर आद-आद संवत् कूदता-कूदता मूंडै आवता खुद री खासियतां रो लेखो राखता उण पैली मोबाईल री घंटी बाजी तो हाथ मोबाईल कनै जावतो कानां सुण्यो, ''हैलो! जनवरी लागगी है अर मार्च रै आखिरी दिवस तांई रो लेखो-जोखो देवणो पड़ैसी। इकतीस मार्च नै औ बरस पूरो हुय जावैला। फर्स्ट अप्रैल सूं नूंवो बरस लाग जावैला।'' इण रो मतलब इणां रो नूंवो बरस फर्स्ट अप्रैल। कनै बैठी पोती डिम्पी उतावळी मांय बोली, ''दादाजी! फर्स्ट अप्रैल यानी अप्रैल-फूल।'' म्हैं धींरै-सी कैयो, ''बेटा! इयां नीं कैवणो।'' मन मांय पूरो बैम कै कठैई सीअे साब सुण्यो तो राता-पीळा हुवैला। पण बात सोळै आना साची है कै सीअे साब रै नूंवो बरस पैली अप्रैल ई मानीजै ताकि दुनिया पईसां रै चक्कर मांय भटकती फिरै। निनाणू रो रुतबो बण्यो रैवै। उणां रो साल उणां नै मुबारक। मोबाईल रो कारण है, आवै तो फेरूं आवै। घंटी बाजै, मन भटकै। सोच्यो, स्यात सीअे साब डिम्पी री आवाज सुणली लागै। नंबर दूजा देखतां धीरप बंध्यो अर बोल्यो, ''हैलो!'' साम्हीं सूं आवाज आई, ''कुण? सरपंच साब!'' म्हैं कैयो, ''हां, बोलो।'' उण कैयो, ''आप तो ठेठ सूं भारतीय संस्कृति रा हिमायती रैया हो, आप सूं पूरी चावना है कै आप अैड़ै नूंवै बरस नै कोई तवज्जो नीं देयनै भारत अर भारतीयता माथै अंजस करण रो पाठ जनता नै पढाय भारत माता रा साचा सपूतां री संख्यां मांय इजाफो करसो। यूं आप अर म्हैं मूळ गुजरात-महाराष्ट्र रा जाया-जलम्या। आपणा दादा-पड़दादा सदियां सूं दीवाळी रो नूंवो बरस मनावता आया। दीवाळी रा नूंवा चौपड़ा खरीद नूंवो लेखो सरू करणो कियां भूल सकां। मातहतां, सज्जनां साथै पंडितां आद नै दीवाळी री भेंट-पूजा ओपै।'' नूंवै बरस पेटै अेक दूजो कैवै, ''आपरै तो सदा दीवाळी रैवै। रामजी री इण धरा माथै रामजी सगळां रो भलो करै। आ सदीव सूं मंगळकामना। दीवाळी री नूंवी फसल आयां, नूंवो बरस मनावण रो कितरो हरख। कितरो सार्थक! आपां तो लिछमी पूजन कर ई नूंवो बरस मनावांला। औ समर्थन चावूं।''

''हां सा जरूर।'' म्हैं पूरी बात री हामी भरतां फोन राख्यो।

फोन राखतां विचार आवण लाग्या—म्हैं नेता! नेता रै नूंवो बरस जीत रो दिवस। शपथ ग्रहण रो दिन उण सारू सब सूं मोटो। जनता लेखो ई उण दिन सूं पूछै। बरस भर में कांई कर्‌यो? पूछतां-पूछतां पांच बरस इयां बीत जावै जाणै काल री बात। जद ठाह पड़ै, माथो पकड़ सोचो कै बगत रै पांखड़ा लागग्या। इतरा जल्द पांच साल निकळग्या। यानी नेता रै शपथ-ग्रहण सूं पद त्याग तांई।

 ISSN : 2320-0995

इण देस मांय जाति, धरम, समुदाय रै साथै नेता, अभिनेता, साधु-संन्यासी री लांबी-चौड़ी लिस्ट! कोई खुद नै टणको अर ईश्वर रूप ई जाणै। इणी 'बू' रै कारणै खुद रै नांव री अणूती भूख! नांव सारू वौ नूंवो बरस स्थापित करै। जैन समाज संवत्सरी रै मौकै 'मिच्छामि दुक्कड़म' कैयनै जतावै कै बरस भर मांय करयोड़ी जाणी-अणजाणी गलतियां सारू माफी। माफ करावो! यानी उण रो नूंवो बरस संवत्सरी (ऋषि पंचमी) रो मालूम पड़ै। इण भांत किण-किण रो बरस किण दिन, तिथ अर वार सूं सरू हुवै। शोध रो विसय। यूं तो हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई रा नूंवा बरस जगचावा। जात, बिरादरी रा न्यारा-न्यारा नूंवा बरस वै ई जाणै। गांव-गळी साथै नगर, कस्बै रो बरस। जद वौ बस्यो, स्थापित हुयो।

म्हैं गतागम मांय पड़्यो सोचतो अर लुगाई दांतां आंगळी देंवती दूजी रजाई नै रीसां बळती खेंचती बोली, ''ल्यो! आ बैड-टी। हैप्पी न्यू ईयर। आज उठोला कै नूंवै बरस सोयां, साल भर सूत्या ई रैवोला। मिनख तो झलो झल आधी रात बधाई देवण लागग्या।''

म्हैं चाय रो घूंट कंठां ढाळतो उण पैली ई जोर री खांसी उपड़ी अर अणमणाई सूं उथळो दियो, ''थैंक्स। सेम टू यू।''

वा खांसी सुण बोली, ''सुबै-स्याणी कुण याद करै?''

''आज तो नूंवो दिन। अलेखूं बोलैला—हैप्पी न्यू ईयर।''

वा ठाह नीं, कांई सोच नै सरमीजती दौड़ी।

म्हैं बड़बड़ावतो, कुण याद करतो हुवैलो! राजा कर्ण री वेळा। स्यात सरदी जमगी। स्यात घणकरा बधाई देवण सारू फोन खड़खड़ावता याद कर सकै।

वाह, म्हारा भारत महान! रंगीला देस थनै सलाम। अठै बारह महीनां मांय तेरह तो नूंवा बरस आवै ई। छानै-छुरकै दोय-चार औरूं आय टपकै तो कोई अजोगी बात नीं। लागै औ है कै बरसां तांई राज करयोड़ी इंदिरा! बांग्लादेस बणाय सकै, इमरजेंसी रै बलबूतै सगळां नै सीधासट कर सकै तो उणां रा चेला-चपाटी इंदिरा संवत् चला सकता, पण आज वौ पाणी मुल्तान गयो। आज हाथ मळै। आ भूल मोदी सरकार करै जैड़ी नीं! जिको आडवाणी, जोशी नै चुप करतां आछा दिन रो सपनो दिखावतां सरकार बदळ सकै। नूंवा कलैंडर जारी करतां स्हैरां, नदियां रा नांव बदळता बजट री तारीख अर नोट बदळ सकै। उणरै आधार माथै कैयो जाय सकै कै संवत् बदळणो इणां रै डावै हाथ रो खेल। लागै कांग्रेस वाळी भूल करण वाळी आ सरकार कोनी। आ नूंवो करनै ईज गळै जीभ देवैला।

देखो! आगै आगै हुवै कांई? भगवान करै इणां री संख्या मांय जनासंख्या री भांत इजाफो नीं हुवै। आ लगोलग कामना, क्यूंकै आयै दिन नूंवो बरस सुण-सुणनै कान पाकग्या।

❖❖

डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित

चांद

अे चांद!
थूं कुण'र कांई है?
म्हनै इण रो पडू़त्तर नीं चावै
असल में
म्हारो जीव तो
इण बात सूं दुख पावै
साची-साची बता
थूं अमावस नै कठै जावै?

ठूंठ

अंतस रै आंगणै
पांगरियोड़ी पीड़
कुण जाणै? कुण समझै?
समै रै परवाणै
रुत रै उणियारै
अणगिण, अजाण पंखेरू
बणायो हो म्हनै
आपरो निजू नीड़!
म्हैं मुळकतो हो मन ई मन
देख'र वांरी मुळक
हरियल पांखाळा सुवटिया
भांत-भांत री रंग-बिरंगी
चिड़कलियां
अेक-दूजी सूं होड करती
टीलोड़ियां
चढ जाती ही
म्हारी सै सूं ऊंची टोई माथै
उण समै मन मांय
अणूंतो ई अंजस व्हैतो
जद म्हारी छियां मांय
रूपाळा मोर
आपरी सतरंगी पांख्यां पसार
निरभै होय निरत करता
तद म्हारै पगां ई
घूघरा बंध जावता।
सदा ई कूकती रैयी
अै कोयलियां
म्हारै डाळ
मंडरावता रैवता
मदमस्त काळा भंवरा
अर
पाणी री ओट में लुक्योड़ो
मदभरियो माखीमाळ
आतो-जातो रातवासो लेवतो
कुरजां रो डार
साचाणी
सुरंगो अर सुहावणो हो
म्हारो संसार।

ठिकाणो :
थर्ड/ई-2
विवि शिक्षक कॉलोनी
जयनारायण व्यास विवि
जोधपुर (राज.) 342011
मो. 9460924400

 ISSN : 2320-0995

म्हैं जीवाजूण रो आधार रैयो
समै रै समचै निभावूं
कुदरत रै वचनां री पाळ
नितर कांई बिगाड़ सकै है म्हारो
बापड़ी अगन री झाळ।

मरतै मानखै सूं म्हैं कौल करियो—
बळतै-बळतै ई सही
थांरी मुगती रो मारग म्हैं बणूंला
उणीज कौल रै परवाणै
आज म्हारो रूप ई न्यारो
पण जीव सारू
जीवणो है म्हनै
कुदरत रो औ ईज अेक जमारो।

अबोली प्रीत

गलकी! मुळकी व्हैला
अंतस रै आंगणै
मंडिया होसी—
चित्त में जुगां जूना
प्रीत रा चितराम।
दीठा होसी—
अदीठ दीठ रा दरसाव
हियै छायो होसी
अणमाप अर अकूंत उमाव
नैणां री अटूट डोर
निरखी ई व्हैला
पीछोळा रै पाणी री
हबोळा खाती लैरां री कोर।
मधरी पून मांय बस्योड़ी ही
थारै सुघड़ डील री सौरम
इमरत सूं कमती कोनी
थारै होठां रो रसपान।
छिणभर ई सही
अेकर फेर मिल्या म्हे
गढ सज्जन रै साम्हीं
साचाणी, उतरग्या हा उण रा
मनहीणा माळीपाना
जकौ आपरी आभाई नै देख'र
मद मांय पोमीजतो हो।
राणाजी!
अै म्हैल-माळिया
अेक गढ'र किला
जुद्ध री जीत
अणहुती क्रीत
सै बधाईजै थांनै
म्हारो तो
मारग ई न्यारो
अंतस रै उणियारै
प्रीतम प्यारो
प्रीत री रीत ई न्यारी
अे रंगीला राणा!
म्हैं हारी
पण म्हारी प्रीत कद हारी?
अणबोली, क्यूं बोलूं आज
सबदां री साख क्यूं भरूं
राणाजी!
ढोल रै ढमकै
म्हैं क्यूं बोलूं
अंतस रै उणियार
म्हारी अबोली प्रीत।

❖❖

दशरथ कुमार सोलंकी

चेत

थारी निजरां मांय
म्हैं हूं फकत
तिरणो पगडांडी रो
कै पछै ठीकरी रस्तै री

आवतो-जावतो
थूं कुचळतो रैयो म्हनै
आपरी पगतळियां सूं
म्हैं थारी ठोकरां नै
करतो रैयो सहन
इण आस मांय
कै थूं कदै तो करैला
म्हारी अर म्हारै
आतम-अभिमान री कदर

म्हैं जोवूं बाट
कै थारी निजरां
बदळ जावै म्हारै पाण
मौको है सुधरण रो भाइड़ा!
इण सूं पैली
कै त्रिण रो भारत मच जावै
कै पछै ठीकरी
घड़ो फोड़ देवै।

उण दिन

जिण दिन
थारा होठ
मुळकणा बंद व्है जावैला
बालपणै रा किणी साथीड़ा
या आम आदमी सूं मिलती बगत

जिण दिन
गूंथण लागैला थारो दिमाग
छोटा-मोटा साजिसां रा जाळा
सीधा-सादा मिनखां रै खिलाफ

जिण दिन
थारो मन
हरखण सूं मना कर देवैला
जाण पिछाण रा आदमी नै
राजी देख'र

जिण दिन
थारो जीव बळण
अर काळजो कळपण लागैला
औ देख'र कै
कीकर व्हैगी
लकीर बडी दूजां री

ठिकाणो :
वित्तीय सलाहकार
डॉ. संपूर्णानंद मेडिकल कॉलेज, जोधपुर
राजस्थान 342011
मो. 9414425611

ISSN : 2320-0995

अर थूं जुगत में जुट जावैला
हर हाल में उण रेख नै काटण री

याद राखजै
उण दिन
थारो खेल खतम हो जावैला
अर औ भी कै
अबै जावती जवारड़ा कर री है थनै
थारै पुरखां रै जमायोड़ी
आन, बान अर शान री जाजम।

बेटी रो जलम

बेटी रो जलम
जाणै ऊगै सोनै रो सूरज
अंधियारा मांय
उजास करण सारू
पण औ सूरज ऊगतां ई
क्यूं छा जावै
बादळा च्यारूंमेर
संका रा, चिंता रा,
दुख अर पीड़ रा
जिणां सूं
किरणां धुंधळा जावै
अर वौ सूरज नीं दे सकै
आपरो पूरो परकास
म्हारो सपनो है कै
हर अेक घर मांय
ऊगै सोनै रो सूरज
बेटी रै रूप मांय
अर उणरै उजास मांय
निखर जावै स्रिस्टी रो सरूप।

होसी थारी-म्हारी बातां

याद आवै वै प्यारी बातां
गांव खेत री न्यारी बातां

पढ-लिख'र कठै पूगग्या
मिलै सब जगै खारी बातां

अेक दिन म्हैं जरूर करूंला
जे रैयी अधूरी सारी बातां

म्हैं तो खतम करणी चावूं
फेरूं ई रैवै जारी बातां

दफ्तर रो अैड़ो डर बैठो है
लिखूं करूं सरकारी बातां

ऊजळा चोळा में मिल जासी
मक्कारी, चोरीजारी री बातां

जाणै कठै लारै छूटगी
प्यारी अर किलकारी बातां

जोवूं बाटां उण बगत री
होसी थारी-म्हारी बातां

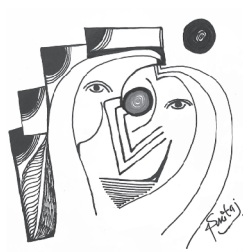

❖❖

देवीलाल महिया 'देबू'

बीनणी अर बुहो

रसोई, न्हाणघर
पळींडो, कुंडियो
गायांळी गौ'र
जठै-जठै बीं रो काम बोलै
बा चोखी लागै अर सराईजै भी
बस बुहै कानी पांवडो मेलतां ई
चौकी वाळो कमरियो (सुसरो)
तणीज जावै
आंगण वाळी साळ (सासू, नणद)
कसीज जावै
अर साथै ई सुंसाण लागज्यै
माळियै री बिंड्यां (जेठ-देवर)

लिछमी री आस

खींपड़ां-सिणियां रो छपरियो
अर बीं रै आगै
देवळ लाग्योड़ी
च्यार फाटपड़्यां रो अडेखण
जिकै नै कराड़ै लगायां
बैठी ही धिराणी
लिछमी आवण री
आस मांय।

कविता तो उपजै

आळस त्याग'र
काम तो कर सकां
धपाऊ, धक्को-धक
पण कविता ?
ना भाई !
कविता तो उपजै
जियां फोगां-बांठां बिचाळकर
डचाब,
का फेर ढळ जावै
जियां टोकी आळै धोरै माथै सूं
झीणी-झीणी रेत
का फेर
तिसळ जावै
जियां कादै मांय
भोळो पग।

बाड़

करड़ में खांगा होय'र
बै रोज मूतै म्हारली बाड़ में
अर सागै ई कुचरता जावै टंटो
स्यात... बळ्योड़ती कीड़्यां ई
पख म्हारो ही लेवै।

ठिकाणो :
द्वारा गोपालराम महिया
ग्राम-पोस्ट-खारी
लूणकरणसर (बीकानेर)
मो. 9602771955

ISSN : 2320-0995

टावर

मिनख रो
घणो ऊंचो होवणो भी
कठै जस वाळी बात है आ
गांव मांय
टावर नै देखतां थकां ई
बूढा-बडेरा कैय ई देवै
'बाळ रे! नस दुखण लागगी!'

भासा बिना

जियां कोई गवाड़ बिचलो
बो बिना फोटू रो थान
जिकै मांयलो देवता
गांव रा तो जाणै
पण दूजां नै के ठाह
मांय
गोगो है कै हड़मान?

मांयला ही जाणै

मंगता नै स्कूटर
मिंदर रो मारग खुलवायो है
सायद कोई मोटो आदमी आवै
मोटो सारो छत्तर लेय'र
जणां ही तो
पैलां आळा सै छोटिया छत्तर
मेल दीन्हा मांय
अब मांय कठै-सीक?
आ तो मांयला ई जाणै
बारलां नै तो सुणीजै
फकत घंटो!

❖❖

पवन राजपुरोहित

थारी प्रीत

मन आंगणियै
मधरो-मधरो
बाजै थारै नेह रो बायरो
इण पुरवाई मांय
झूमतो-गावतो
नित सपनां संजोवतो जीवण
कुचमाद करती
थारी निजरां
लजखावणो हुवतो जीव
झाजो हेत भरतो
तावड़ै छियां ज्यूं
थारो म्हारो सागो
अंवेरूं आपणै प्रेम रा
मीठा रसभीना गीत
गावती जावूं मीरां ज्यूं
बण थारी प्रीत

थूं अणबोल्यो छानै सै

सांभलै म्हारी बात
समझै म्हनै अर
म्हारी बंतळ नै
भरै हुंकारो
बधावै हूंस
बंधावै धीजो
अबखाई मांय थारो सागो
खुसी मांय हरखै म्हारै ज्यूं
सुझावै मारग ठावो
करावै पिछाण चोखै-भूंडै री
म्हारै सूं ई हालै उतावळो
सगळा कैवै थनै बावळो
पण थूं सै सूं समझणो
म्हारा भोळा निसछळ मन!

थारै होवण नै

आय बैठ्यो थूं फेरूं
सुपनां रै गोखड़ै
भोळै छानै-छानै
करै रमतिया निजरां सूं
ठगै बंतळ सूं
उतरग्यो हियै मांय
पसरग्यो रूं-रूं
करूं मैसूस धूजतै डील सूं
थनै अर थारै होवण नै।

❖❖

ठिकाणो :
सी-139
शास्त्रीनगर, जोधपुर
राजस्थान 342003
मो. 9521784720

ISSN : 2320-0995

इन्दु तोदी

मां ई होय सकै ही!

बा पुन्यूं को चांद!
अमावस सूं पैलां ई
घट रैयी ही
भोर की उजळी किरण!
सिंझ्या सूं पैलां ई
ढळ रैयी ही
घर की रखवाळण बा मालण!
अब घर सूं ओझल हो रैयी ही
बा बिरखा मांय बरसाती
दिवलै की ज्यांन बाती!
तेल कै खतम होवण सूं पैली ई,
बुझ रैयी ही
जिणनै खुद कै मिटण की कठै
अंधारो हुवण की फिकर ही!
बिना पथ-प्रदरसक कै
अग्यानी संतान कै
भटक जावण की फिकर थी।
देवता हुवै है इस्यो सुण्यो हो
उसकै रूप में, मैसूस ई करयो है
दिव्य रूपा, सगती सरूपा
बा तो फगत
म्हारी मां ई होय सकै ही!

❖❖

मनड़ा आगै-आगै चाल

मत असमंजस में हाल
मनड़ा आगै-आगै चाल
मत ना तूं थक-हार,
मत होवै तूं बेहाल
तेरी कमी घणी लोग गिणासी
बात-बात पै टोकाटोकी करसी
साग में लूण घणो बतासी
फाट्या में पग अड़ासी
उल्टी बात समझासी
चालती गाडी में बैठ जासी
नईं तो गाडी नै खटाळो बतासी
भासण तेरो बकवास बोलसी
कुरसी पै बैठ्यां सिलाम ठोकसी
मत लोगां की बात मन में राख
हिवड़ै की बात ले मान
आखी दुनिया को है दस्तूर
करयोड़ा पै नाखै धूड़
हार मिल्या मत खा ताव
सांयती, सद्बुद्धि मिलसी
ईश्वर नै ले ध्याव
जे होवै कदै चित डांवाडोल,
मन-मगज की कुंजी खोल
मात-पिता गुरुचरण सीस ले धर
इत-उत कठीनै ई देख्यां बिना
चोटी पर जा चढ!

❖❖

ठिकाणो :
द्वारा दिपक तोदी
तमन्ना इलैक्ट्रिक
छाता चौक, धरान-12
(सुनसरी) नेपाल
मो. 9842023320

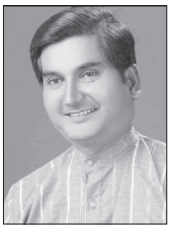

देवकी दर्पण

चंदरमो

मीठा पाणी का कुवां, नतकै न्हाभाळा सुवां
ढाणी छानो क्यूं बैठ्यो छै, कै थूं सैंदी सूं अैठ्यो छै
भर-भर घड़ा उड़ेलै पगल्या, न्हालै गुरगल अलग्यां बगल्यां
अेड्यां का रगड़ा सूं होग्यो कतनो सलकाणो रे
चंदरमो कठी ग्यो चलकणो भलकणो रे।

जी का नैण मृगी सावक सा, रूस्यां पै लागै पावक सा
चंपा की सी बेल बधी जे, भीनी सौरम सूं लधी जे
भर-भर खाच ढोळता पाणी, बीती कतनी बगत न जाणी
झरै पसीनो जस्यां कंवळ मुख मोती, झुळकणो रे। चंदरमो...

सींची दोबड़ी थूं नतकै, खडती जारी बारै बतकै
मूंडो सींद्यो कै बोलै नै मन-मन उळझी गैठ्यां खोलै नै
सुणल्यो हरणी अर खरगोस्यां, जी गागर नै पाळ्या पोस्या
खडी सपातर देगी हिवड़ै, प्रीत को गुलकणो रे। चंदरमो...

काळी ओढणी सितारा, नौ गृह नखतर चमकै सारा
डगळ्यो गुथ्यो सीस पै बोर, पगल्या सणबीजा को सोर
न कोई घटा बादळी आई, न आंधी की गूढळ छाई
देख्यो न जावै हरणी संग, हरण को फुदकणो रे। चंदरमो...

अठपैरयां लारां रैभाळी, ऊका पेटा की खैभाळी
कै मू थारै हिये उतरग्यो, ऊ मन अळी सळी सूं भरग्यो
टप-टप आंख्यां सूं पणिहारी, साची बात उगळ दी सारी
तेला बैठी बारै खडता, जण-जण को दुलखणो रे। चंदरमो...

ठिकाणो :
काव्यकुंज
रोटेदा, वाय-कापरेन
तहसील-के. पाटन
जिला-बूंदी 323301
मो. 9799115517

 ISSN : 2320-0995

सुणता पड़्या नसेड़ा ढीला, ठोकी ज्यूं छाती में कीला
टूट्या बांध भर्‌्या सपना का, जे बसवास बंध्या अपणा का
नाड़्यां मंदरी पड़्गी सारी, बळगी सरणाती मन क्यारी
अब कुण कै लारां हंसी ठिठोळी, कुण सूं चबळणो रे। चंदरमो...

मीरां साच समझतो थारी, होती न अतनी बैमारी
उद्धव कै जद समझ में आई, आखिर प्रीत चीज छै कांई
फीका पड़्ग्या सब उपदेस, लाया जतना बी संदेस
प्रेम पंथ का ईं गेला में, कतनो भटकणो रे। चंदरमो...

करसो

म्हारो करसो छै रोट्यां को देवाळ
झेलै कतना ई काळ, तो बी न छोडै माळ
कळकळतो झेलै तावड़ो, साचो असली धरती को प्यारो डावड़ो

गणपत जी कै मुहरत कर सै बरकत करज्यो म्हांकै
खुद बोर्‌्यां की बोर्‌्यां करसो नाज गार में फाकै
खाद हजारां को कट्टां सूं ऊ देतो न थाकै
ओसर गूणो ब्याऊ फसल सर बस खेतां नै झांकै
छड़कै टंक्या की टंक्यां द्‌वाई जार भल्याई ब्याऊ साकड़ो...

ठूट्यां बंधती कड़ी ठंड में डील गोदड़ी फाटी
अन्न घणो नपजातो करसो देदै पेंटा आटी
कांटा खीला साप डीडवा की नत चढतो घाटी
किस्मत सूं दूरो होतो जार्‌्यो छै कांदो-बाटी
बोट देर्‌्यो छै थपाको लगार बैपरवा म्हारो गावड़ो...

कदी ठंड सूं स्यां मरी तो कधी गळी बरखा सूं
कतना मल्या मुआवजा होती आई या बरसां सूं
नेता गांधी जस्या कोईनै नेह धरै चरखा सूं
नई तकनीक बीज मलै न फसल करै परका सूं
ईं को धणी धोरी छै करतार अेसी सूं पाछा बावड़ो...

ओढे रजाई कस्मीरी नज बंगळो थांकै अेसी
ईं कै घरां टापरी टूटी, नतकै पड़ती पेसी
जमतो पाळो पाणत करतो ठाठ-बाट सब देसी
जूत्या टूटै फरता-फरता तो न बणती केसी
हाकम कलमां की राखै छै मठेट करसा कै कांधै फावड़ो...

खाद मल्यो न कदी टेम सूं पाणी रोतां-रोतां
रोजड़ा फसलां चट करज्या खेतां में सोतां-सोतां
मूंगफळी जौ चणा मटर में जंगळी सूर का गोता
सीमा में फौजी कै नांई खड़ा रात-दिन होता
होज्या सूता कै सराणै ई उजाड़, बकळा भर भागै रोजड़ो...

घणी कठण सूं त्यार होर फसलां मंडी में जाती
बना कदर सूं ढेर करज्यां पाछै बोली पै आती
घण लूमती फौजां आड़तिया की भागी आती
खूब उलाळै मूठ्यां सूं जूत्या पहरज्यां चढ जाती
सीत सूंगो ले मंडी हाळा नाज, मियां की मस मस भापड़ो...

नकल कै लेखै अकल बगाड़ै पटवारी करसां की
नाप कर'र बारै कर दे, जे धरती छी बरसां की
गयो सफाखानै जे करसो, चठ बणती नरसां की
जण-जण घणी उघाड़ी ऊ की ऊ नै सबकी ढाकी
क्यूंकै तेजाजी गावै छै लडार झंडा में लांबो कामड़ो...

कांई कांई मागै करसो थां सूं मांग भरै न
धरणा में यो ई मरतो पण वांको अेक मरै न
लट्ठ खार मौरां पै जे अब तांई फकर करै न
ऊं साचो करसो जे हक कै लेखै कधी डरै न
मांगो आगै आ खुद को अधिकार माथै छै थांकै फागड़ो...

ज्यां-ज्यां मांग बधै पाणी की अेनीकट बणवावै
महंगी बिकै फसल तो टाबर कोलेजां में जावै
बीमो अस्यो करै फसलां को जे नमटै तो पावै
लागै अस्या ग्रामसेवक जे तकनीकी समझावै
रोवां लस्सण नै ऊपर चढज्यां ग्वार होवै यो करसो क्हां खड़ो...

❖❖

 ISSN : 2320-0995

डॉ. विनोद सोमानी 'हंस'

अेक

काजळ री कोटड़ी कुण बचै भाया
सगळा ही गीत बीरा रा ही गाया

भीतड़ां रै कान व्है सुणी ही म्हैं
पोल खोल फंसग्या रामलुभाया

जुगां सूं देखां हां कुण है आपणो
जीं रै गळै लागा वै ही छिटकाया

घोटाळा आज है कालै भी खूब हा
आ असी आग है बुझै नीं बुझायां

निबळा रोवै तो कुण दे हिमळास
वै तो पैली ही करमां रा सताया।

❖❖

जिनगी में पग-पग रोड़ा
बोझ घणो, मरियल घोड़ा

बागां मांयै रसोई बोल दी
लोग घणा, साधन थोड़ा

झालर बाजगी मिंदर में
दरसणां में व्हैग्या मोड़ा

ऊंचा बोल बोलनै फंसग्या
खूंझ्यो खाली, पड़ग्या फोड़ा

आ मैंगारथ मारचा सै नै
खाण-पीण रा पड़ग्या तोड़ा

❖❖

ठिकाणो :
42/43 जीवन विहार कॉलोनी, आनासागर सरक्यूलर रोड, अजमेर राजस्थान 305004
मो. 9351090005

ISSN : 2320-0995

दीनदयाल ओझा

पद-पचीसी

पद-मद पी मातो हुयो, चलै न सीधी चाल।
ढाल बणै, राजी हुयो, सूंप्या खेंचै चाल।।
पद जद-जद रावण बणै, कटै बैन री नाक।
पाळ पाप री भावना, मिलै सदा री खाक।।
पद मन घण अवगुण बसै, गुण आंगळिये लेख।
वो सद वक, बायस बणै, करतब नित नव देख।।
पद तारक मारक सदा, रक्षक भक्षक दोय।
ना कर सोप न दासता, अपणो आपो खोय।।
पद सूंप्यां धूजै धरा, जग जन कर बेहाल।
हाथ न धारै ढाल नित, ना छोडै करवाल।।
कैण, नैण पद धारकू, पल-पल बदळै रंग।
पग-पग नित न्यारा हुवै, चाल ढाल मत दंग।।
पद-पद रो नित सैण है, पद-पद रो मन मीत।
इण गत ना न्यारी हुवै, अंतर मन सद प्रीत।।
पद तन मन साची परख, हद सर हिवड़ै ज्ञान।
देख ही जाणै सकल, कुण शशि तारा भान।।
पद मुख ना वाचालता, रसना नित मधु बोल।
नैण निरख सुण कान दे, लेवै माणस तोल।।
पद राखै चेतन सदा, दोय नैण अरु कान।
पल में परखै समय नै, जोड़ आपणो ज्ञान।।
जद पद मद नातो जुड़ै, नेतो होय निहाल।
पण रैयत परवार सै, पल-पल होय बेहाल।।

ठिकाणो :
साहित्य साधना सदन
केलापाड़ा, जैसलमेर
राजस्थान 345001
फोन : 02992-252576

 ISSN : 2320-0995

पद संगत कर ज्ञान री, सरै सकल सद काम।
भोगै सुख जनता सदा, आप कमावै नाम।।
पद पग तळ घूमै घणा, डाकी चोर डकैत।
पण पद राखै समझ सूं, परख मनख मन हेत।।
नमै तणै रीझै खिजै, पद चित चेतो चेत।
सींचै फसलां गुण परख, नित खड़ीन अर खेत।।
पद-पद न्यारी चासणी, पद-पद न्यारा तार।
पद उर धर संयम सदा, लेवै काम सुधार।।
पद ऊपर नीचै घणा, पद धारक अणपार।
पर निज गुण रा धारकू, लेवै सकल संभार।।
पद जाणै चित चतुरता, मनखां मन री बात।
अंतस गहरो सोचनै, सरै नेह अर ख्यात।।
पद कितरो ओछो समझ, सक्यो न कोई माप।
कद बण जावै नेवलो, कद बण जावै सांप।।
पद अंतर मिळ-जुळ रवै, देव दनुज इक संग।
अवसर आयां जग दिखै, न्यारा-न्यारा ढंग।।
पद में राग मल्हार है, पद में दीपक राग।
कद बरसावै मेघ वो, कद चेतावै आग।।
पद हळको भारी बणै, कद सरतो घण मोल।
थाक्या ज्ञानी सुघड़ नर, सक्यो न कोई तोल।।
पद अबखी सबखी करै, कद सुळझी उळझाय।
पैली में हरखै नहीं, दूजै ना सरमाय।।
पद में नित दोऊ बसै, वर देवण बळ आप।
ना बतळावै बात पद, किसो धरम अर माप।।
पद में तीनूं देव है, बिरमा विस्णु महेस।
कुण जाणै वौ कद बणै, तन रच रूप 'र वेस।।
पद पचीसी जगत री, मांडी दीन दयाल।
पढ लिखसो मन बातड़ी, होसी जीव निहाल।।

❖❖

मदनसिंह राठौड़

शहीद-पचीसी

विणती मां वागेसरी, अधर विराजो आय।
सूरां रो मांडूं सतक, जस री जोत जगाय।।
अरपूं सूरां अंजळी, अंतस रा अरमान।
प्रात उठंतां नित करूं, शहीदां रो सम्मान।।
पग-पग पळकै पूतळै, पग पग पळकै पाट।
पग-पग सतियां सूरमा, मुरधर री इण माट।।
जस रा दीवा नित जळै, जस री जोत जगाय।
जस अंजस रहसी इळा, सूरां सुजस सदाय।।
वेद ग्रंथ नह वाचिया, पढिया नहीं पुराण।
पण सूरां सिंवरू सदा, गौरव कर गुणगाण।।
जप तीरथ जाणूं नहीं, हेली नहीं हिलोर।
सूरां रो सुमरण करूं, परभातां री पौर।।
वंदन, अभिनंदन करूं, मंडन जस महावीर।
खंडन खळदळ रो कियो, गहर वीर गंभीर।।
लड़ियो जद लंकाळ वो, भिड़ियो कर भाराथ।
अड़ियो जस अंकास में, पड़ियो नह वो प्राथ।।
कटियो कमधां केहरी, डटियो रण में आय।
हटियो नीं हिम डूंगरां, मिटियो माटी मांय।।
दळियो दळ दोयण तणो, गळियो गरब गुमान।
वळियो नह पाछो वळै, थळियो राखण शान।।
रमिया बाळू रेत में, जमिया जीतण जंग।
कटिया जो कसमीर में, रणवीरां नै रंग।।

ठिकाणो :
व्याख्याता राजस्थानी
गांव-सोलंकिया तला
तहसील-शेरगढ़
जिला-जोधपुर
राजस्थान 342025
मो. 9982713941

 ISSN : 2320-0995

पुहुप इळा पड़ियां पछै, परमळ तो मिट जाय।
सूरां सिर पड़तां समर, जस सौरम जग छाय।।
गुड़तां थकां गुडाळियै, सुणिया जामण बोल।
खाळू बाळू खेलतां, अनड़ हुवा अणतोल।।
परणी निरखै पीव नै, चंवरी झीणै चीर।
देसी सिर हित देसड़ै, करसी नांव कंठीर।।
कर कुरबांणी देसहित, पुहुमी ऊपर पोढ।
सज धज सुरग सिधावियो, अंग तिरंगो ओढ।।
ध्रू पळटै पळटै धरा, पळटै ससिहर भाण।
पण सूरां समहर गयां, पळटै नहं परवाण।।
साहस सूं लड़िया समर, झेलण अरियां झाट।
रसा रुखाळी रावळी, पग-पग थपिया पाट।।
सिरै परगनो शेरगढ, थळ आथूणी थाट।
दीसै सूरा दीपता, मुरधर री इण माट।।
क्यूं जावां तीरथ करण, की तीरथ रो काम।
सूरां तीरथ शेरगढ, धर रूपाळो धाम।।
सिर ऊंचो रखियो सदा, हितचिंतक हिंदवाण।
कर नह इण ऊंचा किया, सूंप दिया निज प्राण।।
सखी अमीणो सायबो, खड़कावै रण खाग।
बटका झटका बाढतां, आवै अरियां झाग।।
हाथ पताका हिंद री, ऊंची राख उतंग।
रगत हिमाळै रासियो, उर में देस उमंग।।
दिस-दिस दीपै देवळै, दिस-दिस थपिया थान।
संत सती अर सूरमा, रंग है राजस्थान।।
रजवट राजस्थान रो, गढ जोधाणो जोर।
भल आथूणी भोम में, शेरगढ सिरमोर।।
हाटां दीसै हेत री, पाटां में परगट्ट।
माटां मुरधर मोकळी, राखण नै रजवट्ट।।

❖❖

सी. अेल. सांखला

उमगता हेत सूं सिरजी शिक्षाप्रद बाल कहाणियां

मायड़ भासा राजस्थानी मांय रचीजी बाल कहाणियां रो अेक हेत भरयो, रुचिपूरण, शिक्षाप्रद संग्रै है—हेत रो परवानो।

शिक्षक रचनाकर्मी विमला नागला री मायड़ भासा, संस्कृति में रची-पगी कलम कोरणी सूं सिरजी अै राजस्थानी बाल कहाणियां बालमन की पिछाण तो करै ई है, टाबरां रै मन मांय ऊंडै तांई उतरै ई है। इण बगत बालपणै सूं ई पथराता बालमन में नरमाई की दूब उगायनै हेत सूं रीता हुया चौगानां नै फेरूं हरया-भरया कर दे छै। संस्कृति का सोवणा चित्राम उकेरनै सिरजणा का नूंवा-नूंवा मंडाण मांडै छै। 'हेत रो परवानो' मांय नौ बाल कहाणियां सामल है—साचो मीत, हेत रा परवानो, नीति अर नारायण, पुरस्कार, भूत बावजी, माताजी री जोत, पछतावा रा मोती, परोपकार अर अणमोल सीख।

'साचो मीत' कहाणी मांय अवि अेक गरीब घराणा रो सूधो-स्याणो टाबर है। आरटीई की वजै सूं उण रो दाखलो स्हैर रा अेक लूंठा स्कूल मांय हुय जावै। बठै लूंठा हाकम-हलकारां रा टाबर शिक्षा पावै हा। अवि उणां मांय घुळ-मिलबा मांय हिचकै हो। वौ उणां सूं दूरै अपणी ई धुन मांय राजी हो। उणीज स्कूल मांय स्हैर रा नामी जज साब रो छोरो दक्ष ई पढै हो। अवि रै साथै स्कूल रा छोरा-छोर्‌यां रो बुरो ब्यौहार दक्ष नै आछो न्ह लाग्यो। अवि, दक्ष नै आपरो भायलो बणा लियो। दक्ष भायलो होबा सूं अब दूजा टाबर ई अवि सूं हेत भरयो ब्यौहार करबा लागग्या हा।

ठिकाणो :
'शब्दवन'
पोस्ट-टाकरवाड़ा,
जिला-कोटा
राजस्थान 325204
मो. 9928872967

 ISSN : 2320-0995

दक्ष अवि की दोस्ती दक्ष का घरवाळा नै आछी न्ह लागी। वां रो मानबो छो कै दोस्ती तो बराबर का मिनख सूं ई हुवणी चायै। पण अवि वांरी इण मान्यता नै बदळ दे छै। अेक दिन स्कूल जावती बगत दक्ष सड़क पै पाछै सूं आवती मोटर की चपेट मांय आय जावतो, वो तो अवि उणनै बेगो-सो आयनै बचा लियो। पण खुद अवि मोटर की चपेट में आयग्यो। दक्ष का माईत अब गरीब री दोस्ती रो मोल जाणग्या हा। सफाखानै में भरती हुया अवि रो ईलाज दक्ष रा माई-बाप करावै छै। चोखो हुयां पाछै स्वतंत्रता दिवस कै दिन अवि कै तांई बहादुर बाळक को पुरस्कार ई मिलै छै।

कहाणी विधा सूं पत्र लेखन विधा रो विगसाव कस्यां हो सकै, आ बात 'हेत रो परवानो' कहाणी में देखी जाय सकै। स्कूल मांय नूंवा माटसाब जगदीस प्रसाद जी टाबरां नै पत्र लिखबा तांई प्रेरित करै छै। छोरी चिरमी ई आपरी दादीसा रै नांव कागद मांडै। गुरुजी टाबरां रा लिख्या कागदां नै जांचै, तो चिरमी रो पत्र पैलै स्थान पै आवै। पत्र लेखन मांय छोरी चिरमी नै पैलो पुरस्कार मिलै।

'स्वच्छ भारत मिशन' में खास योगदान सारू चीकू नै पुरस्कार मिलबा री बात 'पुरस्कार' कहाणी मांय देखी जाय सकै। 'भूत बावजी' अर 'माताजी री जोत' दोनूं कहाणियां घणी रोचक है अर शिक्षाप्रद भी। गांव रा लोगां में जको ई अंधविस्वास दीखै, उणरै मूळ मांय कोई न कोई संदेस अर सुधार री भावना छुपी है।

टाबर राधे रै मन मांय भूत बावजी रो चूंतरो देखनै डर बैठज्या है। वो सपना मांय भूत-भूत कैयनै चमकबा लागै। उण रा मां-बाप भूत बावजी रो चूंतरो बणावा री असली वजै बतावै छै, ''बात आ है कै दादोसा इण सारू प्लान बणायो कै पीपळ रै सागै रो गेलो सगळो मिनखां रै खेतां जावण रो हो, पण मिनख गांव मांय शोचालय रो उपयोग कोनी करता अर बेगा उठ उण गेला मांय ई गंदगी फैलावता हा। अेक दिन अचाणचक दिमाग मांय भूत बावजी रा चूंतरा रो प्लान आयो अर दूजै दिन बणा दियो।'' भूत बावजी रा चूंतरा री असल कहाणी जाणतां ई राधे रै मन रो सगळो डर मिटग्यो।

अस्यां ई जूना रूंख काटबा सूं बचाबा लेखै कमला काकीसा अपणा टाबर दिव्यू सूं अेक नाटक करबा री बात बतावै। माताजी री जोत जगायनै माताजी रो भाव अणायो जावै। संदा गांवहाळा भेळा हो जावै। माताजी को भाव अणातो दिव्यू कैवै, ''वै मिनख गांव मांय फैक्टरियां लगावणी चावै अर अठै रा रूंख काटणी चावै... समझो कै रूंख मांय देवता रैवै, जे उणनै थे काट दियो तो फेरूं थांरो सरबनास हुय जावैला...'' दिव्यू पूरी कलाकारी दिखावतो बोल्यो।

ढीट अर निकामो किसनो अपणा गरीब बापू का दरद नै खुद अनुभव करनै कस्यां सुधारै, आ बात 'पछतावा रा मोती' में मिलै। 'परोपकार' कहाणी में भलाई रा काम रो नतीजो हमेसा ई आछो ई हुवै, आ बात बताई है। 'अणमोल सीख' कहाणी मांय गरीब

परिवारां रा टाबरां लेखै दादोसा निशुल्क शिक्षा देवै। वै उणां नै साफ-सफाई सूं रैवण री सीख ई देवै।

आं बाल कहाणियां मांय राजस्थानी मुहावरां रो ओपतो प्रयोग हुयो है। इणां सूं तोल पड़ै कै विमला नागला राजस्थानी री गैरी रची-पगी कहाणीकार है। अै मुहावरा है—झार-झार रोवणो, डील लोहीझ्याण हुवणो, मोळा दिन आवणो, नोरा-थोरा करणो, गुड़ सूं मूंडो मीठो करावणो, ऊक-चूक हुवणो, काळी छांवळी देखणो, परचो देवणो, गीत उगेरणो आद-आद।

इण पोथी री राजस्थानी बाल कहाणियां सिरजण री प्रेरणा अर मारग-दरसण लेखै खुद लेखिका यूं मांडै, ''म्हैं अंतस मन सूं आभार प्रगट करूं राजस्थानी रा ख्यातनाम हस्ताक्षर आदरजोग रवि पुरोहित रो जकां रै मारग-दरसण सूं ई आ पोथी आपरै हाथां मांय पूगी है। अंतस सूं आभार म्हारा जीवण साथी आदर जोग जगदीश चंद्र शर्मा रो जिणां रै सैयोग बिना तो म्हारै सफळता रै पायदान माथै पग बधबा री कल्पना ई नीं करी जाय सकै।''

गुरमीत कौर री कूंची सूं सज्या चित्राम घणा ई सोवणा है अर कहाणियां री मूळ भावना ई चतेरै छै।

❖❖

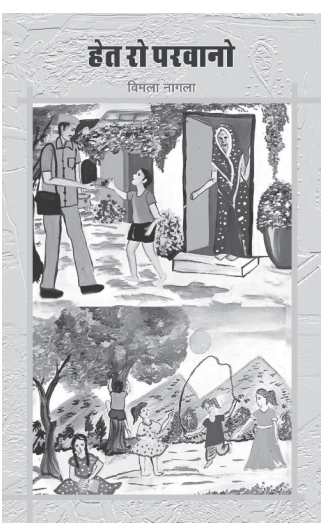

पोथी : हेत रो परवानो

विधा : बालकथा

कहाणीकार : विमला नागला

प्रकासक : राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूँगरगढ़

संस्करण : 2019

पाना : 40

मोल : सौ रुपिया

ISSN : 2320-0995